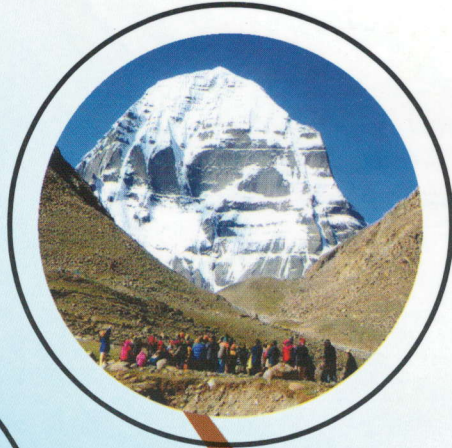


पी. एण्ड एस. बैंक

राजभाषा अंकुर

दिसम्बर - 2019



नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

विमोचन



दिल्ली बैंक नराकास की 51वीं छमाही बैठक के दौरान बैंक की हिंदी तिमाही पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' का विमोचन माननीय अतिथियों द्वारा किया गया। मंच पर उपस्थित हैं- श्री संदीप आर्या, निदेशक, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, श्री शैलेश कुमार, संयुक्त निदेशक, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार, श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक (का.), गृह मंत्रालय, भारत सरकार, श्री रवि कुमार, अध्यक्ष (नराकास), श्री बदलेव सिंह, सचिव (नराकास) तथा हमारे बैंक से श्री अमित श्रीवास्तव, उप महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी, श्री गोपाल कृष्ण, आंचलिक प्रबंधक (दिल्ली-2), श्री राजीव राय (वरिष्ठ प्रबंधक) एवं डॉ. नीरु पाठक (प्रबंधक)

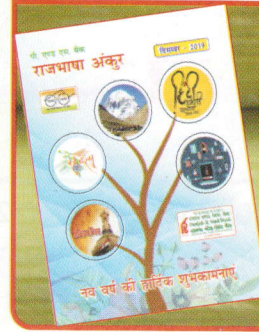
पंजाब एण्ड सिंध बैंक

प्रधान कार्यालय राजभाषा की हिंदी प्रतिका

राजभाषा अंकुर

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

‘बैंक हाउस’ प्रथम तल, 21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली-110 125



अक्टूबर-दिसंबर, 2019

मुख्य संरक्षक

एस. हरिशंकर
प्रबंध निदेशक एवं
मुख्य कार्यकारी अधिकारी

संरक्षक

डॉ. फरीद अहमद
कार्यकारी निदेशक

श्री गोविन्द एन डोग्रे
कार्यकारी निदेशक

मुख्य संपादक

श्री अमित श्रीवास्तव
उप महाप्रबंधक सह
मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक एवं प्रकाशक

श्री राजीव कुमार राय
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल

डॉ. नीरु पाठक, प्रबंधक
श्री देवेन्द्र कुमार, प्रबंधक
श्री मोहन कुमार, अधिकारी
डॉ. कौशलेन्द्र, अधिकारी

ई-मेल : hindipatrika@psb.co.in

पंजीकरण सं.: एफ. 2(25) प्रैस. 91

(पत्रिका प्रकाशन तिथि : 15/02/2020)

‘राजभाषा अंकुर’ में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार, संबंधित लेखकों के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं है। सामग्री की मौलिक एवं कॉपी राइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं।

मुद्रक : सुधीर प्रिन्टर्स

151, देशबंधु गुप्ता मार्केट,
करोल बाग, नई दिल्ली - 110005

फोन: 011-23522683, मो. 9810334493

ई-मेल: sudhirprinters1971@gmail.com

विषय-सूची

क्र. सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	संपादक मंडल/विषय सूची	1
2.	आपकी कलम से	2
3.	संपादकीय	3
4.	रोचक गाथा वंदे मातरम् की	4-5
5.	साइबर सुरक्षा चिंता का विषय क्यों हैं?	6-9
6.	स्वच्छ भारत अभियान (प्रधान का.)	10
7.	राजभाषा समाचार	11
8.	ग्राहक सेवा एवं छुट्टियाँ	12
9.	कार्यशाला/निरीक्षण	13
10.	स्वच्छ भारत अभियान (आँ. का.)	14-15
11.	कैलाश मानसरोवर यात्रा (मराठी लेख हिंदी रूपांतर सहित)	16-17
12.	हिंदी का सरलीकरण	18-19
13.	ज़रा सोचिए/कार्टून कोना	20
14.	संविधान दिवस समारोह	21
15.	550वें. गुरुपर्व	22-23
16.	नराकास उपलब्धियाँ	24
17.	फूलों का महाकुंभ	25
18.	निष्कर्ष	26-27
19.	काव्य-मंजूषा	28-29
20.	करतारपुर साहिब.....	30-32
21.	ग्राहक के मुख से	33
22.	लाल बहादुर शास्त्री	34-36
23.	अर्थव्यवस्था में सुस्ती	37-39
24.	एक अधूरा-सा पता	40-43
25.	बैंक नराकास गुरदासपुर का उद्घाटन	44

आपकी कलम से



हमें आपकी गृह पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' का जुलाई-सितंबर, 2019 का अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित आलेख 'संपूर्ण स्वास्थ्य-योग एवं राजयोग का समन्वय' में योग के महत्व पर प्रकाश डाला गया है इसके साथ ही लेख में राजयोग के विषय में भी विस्तार से बताया गया है जो कि वर्तमान युग में मानव जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक है। 'मेरी नेलांग यात्रा' नामक यात्रा वृत्तान्त में नेलांग की खूबसूरती का चित्रण किया गया है तथा लेख से सॉल्ट रूट के विषय में भी जानकारी प्राप्त हुई। पत्रिका में आपके कार्यालय में आयोजित हिन्दी पखवाड़े की कुछ झलकियाँ भी शामिल की गई हैं जो कि बैंक में राजभाषा की प्रगति को दर्शाती हैं। अंक में प्रकाशित राजिंदर सिंह बेवली जी के लेख में लक्षद्वीप की सुंदरता का उल्लेख किया गया है जिसमें विभिन्न वॉटर स्पोर्ट्स तथा वहाँ के खान-पान के बारे में बताया गया है। लेख के माध्यम से यह जानकारी अत्यन्त हैरानी भी होती है कि लक्षद्वीप में पेट्रोल पंप नहीं हैं। पत्रिका में पंजाब एवं सिंध बैंक के सेवानिवृत्त कर्मिकों द्वारा कनाडा में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलकियाँ भी प्रकाशित की गई हैं। पत्रिका में प्रकाशित अन्य आलेख भी विभिन्न जानकारियों से परिपूर्ण हैं जैसे सारागढ़ी दिवस, उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम एवं बैंकिंग सेवाएँ आदि। आपकी पत्रिका में 'ग्राहक के मुख से' नामक एक खंड प्रकाशित किया गया है इससे ग्राहकों में आपके बैंक की विश्वसनीयता के बारे में पता चलता है। पत्रिका काकलेवर आकर्षक है। इस हेतु आपको बधाई एवं आशा करते हैं कि भविष्य में भी आपकी पत्रिका में इसी प्रकार के अन्य रोचक आलेख एवं तकनीकी जानकारियाँ पढ़ने को मिलेंगी।

रंजन कुमार बरुन, उप महाप्रबंधक, राष्ट्रीय आवास बैंक

हमें बैंक की तिमाही हिन्दी पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' के जुलाई-सितंबर-2019 के अंक की प्रतियाँ प्राप्त हुई, जिसमें प्रादेशिक भाषा के प्रचार-प्रसार की दिशा में बंगला भाषा की रचना गुरु दक्षिणा का हिन्दी प्रारूप बहुत ही रोचक है जिससे बंगला भाषा को न जानने वाले कर्मिकों ने रचना का आनन्द लेंगे।

हम पुष्टि करते हैं कि राजभाषा अंकुर पत्रिका की प्रतियाँ हमारे अधीन शाखाओं को भेजी गई हैं। उक्त अंक के लिए राजभाषा विभाग का धन्यवाद ज्ञापन करते हैं, इसी आशा व अपेक्षा के साथ कि भविष्य में भी इसी तरह के अंकों को पढ़ने का सौभाग्य मिलता रहेगा।

प्रवीण मोगिया, आंचलिक महाप्रबंधक, दिल्ली -1

हमें आपके बैंक की तिमाही राजभाषा पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' का सितंबर 2019 अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद।

पत्रिका में विविध गतिविधियों एवं खबरों का समावेश व्यवस्थित ढंग से किया गया है, इसमें प्रकाशित आलेख 'संपूर्ण स्वास्थ्य-योग एवं राजयोग का समन्वय', 'भारतीय संगीत परंपरा', 'उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम एवं बैंकिंग सेवाएँ', 'भारतीय अर्थव्यवस्था पर बैंकों के विलय का प्रभाव', "चलो दिलदार चलो चांद के पार चलो", कराता आलेख "मेरी नेलांग यात्रा" एवं "एक यात्रा लक्षद्वीप की" तथा सिख रेजिमेंट के शौर्य को दर्शाता "सारागढ़ी दिवस-12 सितम्बर" पठनीय है, साथ ही कविताएं काफी मनोरम लगी।

बांग्ला भाषा की रचना, उसके हिन्दी रुपांतरण सहित प्रकाशित करना कुछ अलग हटकर प्रस्तुत करने की दिशा में साधक कदम है, इसके लिए संपादक मण्डल के सभी सदस्य हार्दिक बधाई के पात्र हैं।

संजय सिंह, सहायक महाप्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा



प्रिय पाठको,

जब यह अंक आपको प्राप्त होगा, तब शिशिर ऋतु की सुनहरी धूप के साथ नववर्ष 2020 आपका स्वागत कर चुका होगा। सर्वप्रथम आप सभी को मेरी तथा राजभाषा विभाग की ओर से नव वर्ष की बहुत-बहुत बधाई तथा शुभकामनाएं। नए वर्ष के आगमन के साथ राजभाषा अंकुर पत्रिका भी अपने हर अंक के साथ लगातार ऊंचाइयाँ छू रही है। मुझे यह बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही

है कि दिल्ली नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा हमारी पत्रिका “राजभाषा अंकुर” तथा ई-पत्रिका “राजदीप” को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इसके लिए न केवल राजभाषा विभाग बल्कि आप सभी बधाई के पात्र हैं। निश्चित रूप से बैंक के सभी भाषा-भाषी स्टाफ सदस्यों की पत्रिका में सहभागिता के कारण ही यह संभव हो पाया है। बैंक के ग्राहक भी पत्रिका से जुड़ रहे हैं जिससे पत्रिका का कलेवर और भी विस्तृत होता जा रहा है। पत्रिका के गौरव तथा निरंतरता को बनाए रखने के लिए आपकी सहभागिता तथा सुझाव ही इसकी सफलता का मूलभूत आधार है।

पत्रिका के प्रस्तुत अंक में, राजभाषा हिंदी तथा बैंकिंग से संबंधित लेखों के साथ इस अवधि में घटित विभिन्न गतिविधियों जैसे स्वच्छ भारत अभियान, संविधान दिवस तथा गुरूनानक देव जी के 550वें गुरूपर्व से संबंधित छायाचित्र तथा गतिविधियाँ अत्यंत रुचिकर तथा ज्ञानवर्धक हैं। भाषायी एकता सूत्र संयोजन की कड़ी में इस बार सुश्री नम्रता उपाध्ये द्वारा रचित मराठी लेख (हिंदी रूपांतर सहित) पत्रिका का विशेष आकर्षण हैं। इसके साथ ही इस बार पत्रिका में दिए गए अधिकांश सूत्रवाक्य महान साहित्यकार श्री जयशंकर प्रसाद जी की रचनाओं से लिए गए हैं।

“राजभाषा अंकुर” एक प्रयास है बैंक में हिंदी भाषा के प्रचार और प्रसार का। आशा है कि बैंकिंग एवं साहित्यिक विविधताओं से परिपूर्ण “राजभाषा अंकुर” का यह अंक भी आपको पसंद आएगा। पत्रिका के बारे में अपनी प्रतिक्रिया हमें अवश्य भेजें, ताकि हम अपनी पत्रिका को अपने पाठकों की रुचि तथा आवश्यकतानुसार ढाल सकें

अमिताभ

अमित श्रीवास्तव

उप महाप्रबंधक

सह मुख्य राजभाषा अधिकारी

रोचक गाथा वंदेमातरम् की

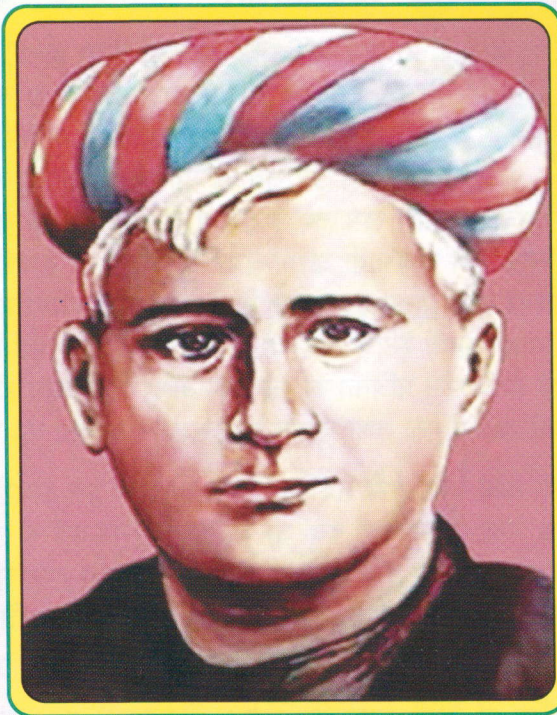
“मेरी सारी कृतियाँ गंगा में डुबा दो तो कोई हानि नहीं होगी, परंतु यह एक शाश्वत महान गीत बचा रहेगा तो देश के हृदय में मैं जीता रहूँगा” यह शब्द थे राष्ट्रीय पुनरुत्थान के अग्रदूत बंकिमचन्द्र चटर्जी के, जो उन्होंने आज से सौ से भी अधिक वर्ष पूर्व लिखे गए अपने गीत ‘वंदेमातरम्’ के विषय में कहे थे। बंगाल में सन 1838 में जन्मे इस महान साहित्यकार ने शायद कल्पना भी नहीं की होगी कि ‘वंदेमातरम्’ का यह गीत जन-जन के हृदय पर एक घोषणा के रूप में अंकित हो जाएगा और देशभक्तों के अंतःकरण की आवाज का शब्दबद्ध प्रतिरूप सिद्ध होगा। माँ की वंदना करने वाली यही पंक्तियाँ विदेशी दासता के विरुद्ध लाखों देशवासियों का प्रेरणास्त्रोत बनीं। हजारों युवकों ने गोलियों का सामना किया, ब्रिटिश जेलों में दारुण यंत्रणा भोगी और हँसते-हँसते वंदेमातरम् का जयघोष करते हुए फांसी के तख्ते पर झूल गए। श्री अरविंद की यह उक्ति साकार हो गई, “एक दिन देशवासियों को राष्ट्रधर्म की दीक्षा देने का मंत्र बनेगा।”

इस गीत के पीछे की कथा और व्यथा को समझने के लिए स्वतंत्रता-संग्राम के पृष्ठों को उलटना पड़ेगा। खून से लिखी गई मातृभूमि की अर्चना की यह कहानी जितनी लोमहर्षक है, उतनी पीड़ा भरी भी है। इस गीत की रचना सन 1875 में की गई, लेकिन छः वर्षों तक लोगों को इसकी विशेष जानकारी नहीं थी। अप्रैल 1881 में एक बंगला पत्रिका ‘बंग-दर्शन’ में इसके प्रकाशन ‘आनंद मठ’ उपन्यास में यह गीत दिखाई पड़ा। इस उपन्यास में चित्रित सन्यासियों के मुख से मातृभूमि के प्रेम से पागल हुए कंठों से जंगलों, पहाड़ों और खंडहरों में ‘वंदेमातरम्’ की गूँज उठती थी। सन 1882 से सन 1894 तक ‘आनंद मठ’ के पाँच संस्करण प्रकाशित हुए। राष्ट्रीय भावनाओं को प्रज्वलित करने का काम ‘वंदेमातरम्’ के माध्यम से होने लगा। सन 1896 में कलकत्ता में हुए राष्ट्रीय कांग्रेस अधिवेशन में कविवर रविन्द्रनाथ टैगोर ने इस गीत को सर्वप्रथम

संगीतबद्ध किया। थोड़े ही समय में इसका सर्वत्र प्रचार हो गया और तब से कांग्रेस अधिवेशन का प्रारंभ व समापन इसी गीत से होने लगा।



और फिर सितंबर, 1905 आया, जब लॉर्ड कर्जन के क्रूर हाथों से बंगाल विभाजन की दर्दनाक कहानी लिखी गई। ब्रिटिश सत्ता की राजधानी कलकत्ता बनाई गई। इस घोषणा के बाद, इस रक्तंजित कथा पर देशभक्तों ने सारे भारत में अपने बलिदानों की छाप लगा दी। इस समय सारा बंगाल एक ही नारे से निनादित था ‘वंदेमातरम्’। देशभक्तों के विश्वास का शब्द ‘वंदेमातरम्’ कर्जनशाही की दृष्टि में देशद्रोह का प्रतीक बन गया। पूर्व बंगाल में कर्जन के अधीनस्थ ले.गवर्नर फुलर ने कानूनन ‘वंदेमातरम्’ पर प्रतिबंध लगा दिया। बाबू सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के नेतृत्व में बंदी विरोधी समिति ने इसका विरोध करने का बीड़ा उठाया। ‘वंदेमातरम्’ पर प्रतिबंध लगाते ही यह देशभर में सर्वव्यापी हो गया। साम्राज्यशाही के अत्याचार जितने बढ़ते, उतनी तेजी से प्रतिकार भी होता था।



बंकिमचन्द्र चटर्जी

14 अप्रैल, 1906 को बंगाल का प्रांतीय अधिवेशन बारीसाल में तय किया गया था। सरकार ने गाँव-गाँव में दीवारों पर पत्रक टांगकर घोषणा की कि अधिवेशन की शुरुआत जुलूस से होगी, जिसमें ‘वंदेमातरम्’ गाया नहीं जाएगा। अमृत बाजार पत्रिका में तत्कालीन संपादक मोतीलाल घोष ने गर्जना की, “चाहो तो मेरा सिर फोड़ दो, पर वंदेमातरम् हम गाएंगे ही।” जुलूस में वंदेमातरम् का गान हुआ। पुलिस ने लाठी चार्ज किया, जखमी युवकों को उसी हालत में अधिवेशन में लाया गया और हजारों प्रतिनिधियों ने खड़े होकर वंदेमातरम् की गूँज से पुलिसराज का हृदय कंपा दिया।

बारीसाल के जुलूस पर हिंसक हमले की प्रतिक्रिया अपूर्व थी। 'वंदेमातरम्' ने देश की विस्फोटक परिस्थिति में बारूद में चिंगारी का काम किया। कर्जन त्यागपत्र देकर स्वदेश लौट गया। सरकार के पास 'वंदेमातरम्' पर प्रतिबंध की आज्ञा का कोई तर्क संगत उत्तर नहीं था। 'वंदेमातरम्' पुकारने से सरकार का कोई अनर्थ भी नहीं होता था अपितु, प्रतिबंध की आज्ञा ने ही 'वंदेमातरम्' का देशभर में जादुई प्रभाव पैदा किया था। श्री अरविंद ने लिखा "बंग-वासी सत्य की शोध में रत थे। तभी किसी दिव्य क्षण में कहीं से किसी ने नारा लगाया और आज 6 अगस्त, 1905 के दिन असंख्य कंटों से राष्ट्रीय मंत्र मुखरित हुआ।"

6 अगस्त, 1906 को विपिनचन्द्र पाल ने अंग्रेजी दैनिक 'वंदेमातरम्' का प्रकाशन शुरू किया। बाद में इसका संपादन श्री अरविंद ने संभाला। कलकत्ता कांग्रेस में भगिनी निवेदिता ने 'वंदेमातरम्' से अंकित राष्ट्रध्वज तैयार किया। 1920 में लाला लाजपत राय ने दिल्ली से हिंदी में तथा 1941 में बंबई से गुजराती में 'वंदेमातरम्' अखबार निकाला। एक दूसरे का अभिवादन करते समय 'वंदेमातरम्' का उद्घोष आरंभ हो चुका था। नवंबर 1907 में 'युगांतर' में लिखा "वंदेमातरम् की घोषणा से शत्रु का धैर्य टूट गया है, उसका सामर्थ्य टूट गया है।" शहीद मदनलाल ढींगरा को फांसी मिलने पर उनका बयान 'आह्वान' शीर्षक से 'डेलीन्यूज' में प्रकाशित हुआ। इसका अंतिम शब्द है 'वंदेमातरम्'। नासिक में 'वंदेमातरम्' पर प्रतिबंध के विरुद्ध आवाज उठाने पर वामनराव खरे, बाबा सावरकर व नौ छात्र पकड़े गए। पुलिस की लाठियों को 'वंदेमातरम्' की ढाल पर सहने वाले इन वीरों के तो मुकदमे का नाम ही 'वंदेमातरम्' कांड पड़ गया।



स्वतंत्रता सेनानी वीर वि.दा. सावरकर को जिन लेखों के कारण 'काला पानी' की सजा हुई, उनमें सबसे महत्वपूर्ण लेख 'वंदेमातरम्' है, जो 1907 में बंबई से प्रकाशित होने वाले अखबार 'बिहारी' में छपा था। किंगफोर्ड पर बम फेंक कर उसे मारने का प्रयास करने वाले 18 वर्षीय खुदीराम बोस को 11 अगस्त, 1908 को फांसी दे दी गई और शवयात्रा से लेकर शरीर चिता पर रखे जाने तक एक ही गूँज सुनाई पड़ती थी "वंदेमातरम्"।

राम प्रसाद बिस्मिल 16 दिसंबर, 1927 को 'वंदेमातरम्' का ही उद्घोष करके फांसी के फन्दे से झूले थे। 12 फरवरी, 1934 को वधस्थल की ओर जाते हुए क्रांतिकारी सूर्यसेन के कंठ से 'वंदेमातरम्' का स्वर गूँजा। फांसी के तख्ते से पूर्व ही इस वीर पर पुलिस ने इस स्वर को रोकने के लिए लाठियों की बरसात की। कारागार से भी उसी समय इस नारे की गूँज शुरू हुई और राजबंदियों की पिटाई के बाद सूर्यसेन को अचेत अवस्था में ही फांसी दे दी गई।

वंदे मातरम् !
सुजलाम्, सुफलाम्, मलयज शीतलाम्,
शस्य श्यामलम्, मातरम्,
वंदे मातरम्,
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम्,
फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्,
सुहासिनीं सुमधुरभाषिणीम्,
सुखदाम्, वरदाम्, मातरम्,
वंदे मातरम् ! वंदे मातरम् ! वंदे मातरम् !

क्रांतिकारियों की इस गाथा ने देशभर में बलिदान की भावना भर दी। अंग्रेज अधिकारियों के सामने कारागार से लेकर फांसी के तख्ते तक गीत गाया जाने लगा। 'केम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया' में इस गीत का उल्लेख "हिन्दुस्तान का अनाभित्त गीत" कह कर किया गया। थियोदर एलशे ने अपनी पुस्तक 'लिगेसी ऑफ लोकमान्य' में लिखा है, "बंगाल के समस्त महाद्वीप में यह घोष गूँज उठा। 'वंदेमातरम्' भारत की समस्त महानता, बुद्धि, विरासत और धीरता एक ही शब्द में समाहित हो गई। 'वंदेमातरम्' भारत माता की संतान वंदना को झुकी और भारत माँ उठ खड़ी हुई।"

आंचलिक प्रबंधक, गुरुग्राम

साइबर सुरक्षा चिंता का विषय क्यों है ?

आज इंटरनेट, कंप्यूटर, स्मार्ट फोन और अन्य संचार प्रौद्योगिकी उपकरण हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन गए हैं। कल्पना कीजिए की हम इन स्मार्ट उपकरणों पर हर दिन कितना समय बिताते हैं। हमने गूगल, ई-मेल, व्हाट्सएप, ट्विटर, फेसबुक आदि जैसे इंटरनेट संचार माध्यमों को अपनी रोजमर्रा की गतिविधियों का एक अभिन्न हिस्सा बना लिया है, लेकिन हम में से ज्यादातर साइबर सुरक्षा एवं स्वयं को साइबर अपराधों से बचाने के लिए आवश्यक सुरक्षा उपायों के प्रति अनभिज्ञ हैं।

साइबर क्राइम क्या है?

साइबर अपराध वे अपराध हैं जो कंप्यूटर, इंटरनेट या मोबाइल प्रौद्योगिकी का उपयोग करके व्यक्तियों, कंपनियों या संस्थानों के खिलाफ किए जा सकते हैं। साइबर क्रिमिनल पीड़ितों पर हमला करने के लिए सोशल नेटवर्किंग साइट्स, ई-मेल, चैट रूम, पायरेटेड सॉफ्टवेयर, वेबसाइट आदि जैसे प्लेटफॉर्म का उपयोग करते हैं। बच्चे भी विभिन्न प्रकार के साइबर अपराधों के शिकार हो सकते हैं। साइबर हमले और अधिक जटिल तथा परिष्कृत होते जा रहे हैं तथा इनका लक्ष्य फोन नंबर, पता, तस्वीरें, बैंक विवरण इत्यादि जैसी व्यक्तिगत जानकारी को चुराना है। साइबर अपराधियों द्वारा आपकी इस व्यक्तिगत जानकारी का उपयोग आपके खिलाफ कई तरीकों से किया जा सकता है जैसे कि जाली प्रोफाइल बनाकर, साइबर खतरा देकर।

मित्रो, चिंता ना करें, एहतियात बरतकर तथा सजग रहकर आप स्वयं को साइबर अपराधियों से बचा सकते हैं। मैं आज आपको विभिन्न प्रकार के साइबर अपराध समझने तथा उन सावधानियों को अपनाने में मदद करूँगा जो साइबर अपराध के शिकार बनने के खतरे को कम करने के लिये आपको अपनानी चाहिये।

साइबर खतरे जो किसी को भी प्रभावित कर सकते हैं

साइबर खतरे के अलग-अलग संभावित तरीके हैं जिनका उपयोग इंटरनेट या मोबाइल प्रौद्योगिकी पर हमला करने के लिए किया जा सकता है। साइबर अपराधी हमारी संवेदनशील सूचना तक अनधिकृत पहुंच बनाना चाहते हैं। अधिकांश मामलों में साइबर अपराधी स्पष्ट उद्देश्य के लिये अटैक करते हैं जिसके लिए वे कुछ सबसे प्रभावी तरीकों का उपयोग करते हैं।

साइबर अपराधियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले कुछ सामान्य तरीके हैं:

1. ई-मेल धोखाधड़ी

आप में से अधिकांश के पास आपका व्यक्तिगत ई-मेल खाता है। हमें न केवल अपने मित्रों और परिवार के सदस्यों को ईमेल भेजने के लिए

एक ईमेल अकाउंट की आवश्यकता है बल्कि एक सोशल मीडिया अकाउंट, ऑनलाइन गेमिंग अकाउंट और अन्य ऑनलाइन अकाउंट खोलने के लिए भी। हमारा ईमेल खाता हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। जैसे-जैसे आप बड़े होंगे, आपके ईमेल खाते की उपयोगिता बढ़ेगी। आप अपने ईमेल खाते का उपयोग बैंक, मोबाइल सेवा प्रदाता, अपने कॉलेज से संचाद करने आदि के लिए करेंगे। यह जानना बहुत जरूरी है कि आप अपने ईमेल खाते की सुरक्षा कैसे करें?



श्री राजेश दांगी

यह काम किस प्रकार करता है?

ऐसे कई तरीके हैं जो साइबर क्रिमिनल ईमेल का उपयोग करके आपके सिस्टम को नुकसान पहुंचा सकता है अथवा आपकी महत्वपूर्ण व्यक्तिगत जानकारी एकत्र कर सकता है। आपने फिशिंग, विशिंग आदि के बारे में सुना होगा। आप इनके बारे में ऑनलाइन पढ़ सकते हैं लेकिन अब हम यहाँ बहुत ही सरल तरीके से समझाने की कोशिश करेंगे कि ईमेल धोखाधड़ी कैसे हो सकती है।

- दुनिया में कहीं भी बैठा एक साइबर अपराधी आपको एक नकली खाते से एक ईमेल भेज सकता है जो वास्तविक खाते की तरह दिखता है। उदाहरण के लिए, आपको अपने गेमिंग पोर्टल या सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से एक मेल प्राप्त हो सकता है जहां सेवा प्रदाता या ईमेल आईडी की वर्तनी थोड़ी बदल जाएगी—customersupport@gammingportal.com क्या आपने देखा है कि 'गेमिंग' की वर्तनी गलत है? इन ईमेलों में ऐसे लिंक होते हैं जो आपको दूसरे पेज पर ले जाते हैं जहाँ आपसे तकनीकी उन्नयन, अनुपालन या अन्य नकली कारणों हेतु (जो आपको सही प्रतीत होंगे) पासवर्ड/अन्य विवरण दर्ज करने के लिए कहा जाएगा और इस प्रकार अंत में आप अपना सारा ब्यौरा साइबर अपराधियों को दे देंगे।
- साइबर अपराधियों द्वारा आमतौर पर उपयोग में लाया जाने वाला एक और आम तरीका एक मालवेयर (खतरनाक प्रोग्राम जो आपके कंप्यूटर को प्रभावित कर सकता है) वाला दस्तावेज (वर्ड या एक्सेल फाइल) सलग्न करके आपको ईमेल भेज देना है। इस ईमेल अथवा दस्तावेज का शीर्षक आपको बहुत पसंद आ सकता है जैसे प्रसिद्ध ऑनलाइन गेम जीतने के लिए टिप्स या किसी अन्य आकर्षक शीर्षक के लिए मुफ्त सिक्के प्राप्त करने के लिए टिप्स। यदि आप ऐसे दस्तावेज खोलते हैं तो मालवेयर आपके कंप्यूटर या

मोबाइल में इंस्टॉल हो सकता है तथा साइबर अपराधियों को नियमित अंतराल पर आपके कंप्यूटर से महत्वपूर्ण संदेश भेज सकता है।

- एक सामान्य ईमेल धोखाधड़ी यह भी है जब एक साइबर अपराधी आपको एक ईमेल भेजता है जो बताता है कि आपने एक लॉटरी अथवा अनोखा उपहार जीता है या विदेश में रह रहे आपका कोई दूर का रिश्तेदार आपके लिये धन छोड़कर गया है। यह प्रस्ताव इतना आकर्षक होता है कि आप ईमेल खोलते हैं और उसका जवाब दे देते हैं। साइबर अपराधी विजयी राशि को स्थानांतरित करने के लिए आपका व्यक्तिगत विवरण और बैंक विवरण मांगता है। वे आपसे विनिंग राशि ट्रांसफर करने के लिए प्रोसेसिंग शुल्क जमा करने के लिए भी कह सकते हैं। इस तरह के सभी ईमेल आम तौर पर नकली होते हैं और इरादा आपकी व्यक्तिगत जानकारी या आपसे पैसे लेने का होता है।
- ईमेल अकाउंट हैकिंग साइबर अपराधियों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला एक और आम तरीका है। वे आपकी ईमेल आईडी और पासवर्ड प्राप्त करने के लिए मालवेयर या अन्य ट्रिक्स का उपयोग कर सकते हैं। एक बार जब आपका ईमेल अकाउंट हैक हो जाता है तो साइबर क्रिमिनल्स इसका उपयोग आपकी महत्वपूर्ण जानकारी जैसे सोशल मीडिया अकाउंट, बैंक अकाउंट आदि तक पहुंच प्राप्त करने के लिए कर सकते हैं। वे आपत्तिजनक ईमेल को आपके सभी संपर्कों को भी भेज सकते हैं।
- आप निम्नलिखित तरीकों का पालन करके खुद को ईमेल धोखाधड़ी का शिकार बनने से बचा सकते हैं:
- पहला महत्वपूर्ण कदम यह है कि अपनी खुद की ईमेल आईडी को सुरक्षित रखें ताकि इसे हैक या समझौता न किया जाए। इसके लिए आपको एक जटिल पासवर्ड का उपयोग करना होगा और इसे समय-समय पर बदलना होगा। एक सरल पासवर्ड जैसे पासवर्ड 123 या आपका नाम या जन्म तिथि साइबर अपराधियों के लिए अनुमान लगाना बहुत आसान होता है। मुश्किल पासवर्ड का उपयोग करें जिसके लिए आप उसमें अक्षरों और अंकों का अल्फान्यूमेरिक संयोजन का उपयोग करें।
- अपने ईमेल खाते का पासवर्ड कभी भी किसी को ना बताये? पासवर्ड बताने से आपका ईमेल खाता खतरे में पड़ सकता है। अपरिचित व्यक्ति से प्राप्त लिंक अथवा अटैचमेंट को क्लिक न करें।
- यदि आप अपने मोबाइल पर ईमेल का प्रयोग करते हैं तो अपने मोबाइल के इस्तेमाल के लिये एक मुश्किल पासवर्ड रखें।

2. ऑनलाइन लेनदेन में धोखाधड़ी

ऑनलाइन लेनदेन में धोखाधड़ी का मतलब किसी साइबर अपराधी द्वारा आपके बैंक खाते से गैर कानूनी रूप से पैसा निकालना अथवा उसे अन्य बैंक खाते में ट्रांसफर करना है। ऑनलाइन लेनदेन में धोखाधड़ी उस समय हो सकती है जब आपका लॉग-इन अथवा बैंक खाते का ब्यौरा अथवा क्रेडिट कार्ड ब्यौरा किसी साइबर अपराधी द्वारा चुरा लिया जाए।

यह कैसे होता है ?

साइबर अपराधियों द्वारा लोगों से ऑनलाइन धोखाधड़ी करने के लिए कई तरीके अपनाए जाते हैं। साइबर अपराधी एक फर्जी खाते से आपको ईमेल भेज सकते हैं जो आपके बैंक या क्रेडिट कार्ड सेवा प्रदाता से प्रतीत होता है। जब आप ईमेल में दिए गए लिंक पर क्लिक करते हैं तो यह आपको एक पेज पर ले जाता है जहां आपकी संवेदनशील जानकारी जैसे बैंक खाता विवरण, कार्ड विवरण, कार्ड सत्यापन मूल्य (सीवीवी), समाप्ति तिथि, आदि के बारे में पूछा जाता है। जब आप इन विवरणों को साझा करते हैं, तो आपका खाता कंप्रोमाइज़ हो सकता है।

साइबर अपराधी अपनी फर्जी पहचान से अपने को बैंक कर्मचारी बताकर आपको कॉल कर सकते हैं और आपसे क्रेडिट कार्ड अथवा बैंक ब्यौरा अर्थात अकाउंट नंबर, पिन, सीवीवी, वैधता तिथि, जन्म तारीख पूछने का प्रयास कर सकते हैं। ऐसा ब्यौरा देने पर आपका अकाउंट कंप्रोमाइज़ हो सकता है।

आमतौर पर, हमारा मोबाइल नंबर हमारे बैंक खाते से जुड़ा होता है। साइबर अपराधी अपने को मोबाइल सर्विस प्रदाता का कर्मचारी के रूप में प्रस्तुत करते हुए आपको कॉल भी कर सकते हैं और आपको सूचित कर सकते हैं कि यदि आप अपने सिम को अपडेट नहीं करेंगे तो आपका मोबाइल बंद हो जाएगा सिम को अपडेट करने के लिए, वे आपको एक लिंक भेजेंगे या आपको अपने नंबर से सेवा प्रदाता को एक एसएमएस भेजने के लिए कहेंगे।

वास्तव में वे आपसे मोबाइल प्रदाता को एसएमएस इसलिए भिजवाने का प्रयास कर रहे हैं कि आपका मौजूदा सिम ब्लॉक हो जाए और आपका डुप्लीकेट सिम जारी हो जाए। वे सेवा प्रदाता से डुप्लीकेट सिम प्राप्त करके आपके मोबाइल नंबर और बैंकिंग ऐप का इस्तेमाल करके ऑनलाइन लेनदेन करने के लिए उसका इस्तेमाल करते हैं।

क्या आप ऑनलाइन लेनदेन की धोखाधड़ी को लेकर चिंतित हैं, चिंता मत कीजिए जानकारी और सावधानी से आप स्वयं को ऑनलाइन लेनदेन की धोखाधड़ी से बचा सकते हैं। आप अपने बैंक तथा कार्ड का ब्यौरा जैसे कार्ड नंबर, पिन, सीवीवी, वैधता समाप्ति तिथि, बैंक खाता पासवर्ड इत्यादि किसी के साथ साझा ना करें, इससे आप स्वयं को ऑनलाइन लेन देन की धोखाधड़ी से बचा सकते हैं।

आईए इस बात पर चर्चा करें कि कैसे आप स्वयं को ऑनलाइन लेनदेन की धोखाधड़ी का शिकार होने से बचा सकते हैं।

आप निम्नलिखित तरीकों का पालन करके खुद को ऑनलाइन धोखाधड़ी का शिकार बनने से बचा सकते हैं:

- अपने बैंक तथा कार्ड का ब्यौरा जैसे कि ऑनलाइन अकाउंट पासवर्ड, कार्ड नंबर, सीवीवी, वैधता समाप्ति तिथि, पिन, ओटीपी इत्यादि किसी के साथ साझा ना करें। इन ब्यौरों को साझा करने से आपके खाते को खतरा हो सकता है जिससे अवैध ऑनलाइन वित्तीय लेनदेन किया जा सकता है।
- अपने बैंक खाते के ऑनलाइन पासवर्ड तथा अपने डेबिट/क्रेडिट कार्ड के पिन को नियमित रूप से अपडेट करने की आदत बनाएं।
- जब भी अपने बैंक खाते में लॉगिन करें तो बैंक की वेबसाइट स्वयं टाइप करने की आदत बनाएं। ईमेल, मैसेज अथवा पॉप अप पर आने वाले बैंक वेबसाइट के लिंक पर कभी क्लिक ना करें। यह जाली लिंक हो सकते हैं और आपको जाली वेबसाइट पर लेकर जा सकते हैं। एक बार जब आप जाली वेबसाइट से अपने बैंक खाते पर लॉगिन करते हैं तो आपकी गोपनीय जानकारी जैसे खाता संख्या तथा पासवर्ड चोरी हो सकते हैं।
- हमेशा ध्यान दें की वेबसाइट URL HTTPS से शुरू हो रहा हो। HTTPS वाले वेबसाइट URL आपके डाटा को वेबसाइट पर इनक्रिप्ट करके प्रदान करता है तथा उसे किसी प्रकार की हानि से सुरक्षित रखता है। जो वेबसाइट HTTPS से आरम्भ नहीं होती उस पर अपनी गोपनीय सूचना जैसे की ऑनलाइन अकाउंट पासवर्ड, कार्ड नंबर, सीवीवी वैधता समाप्ति तिथि, पिन, ओटीपी इत्यादि साझा ना करें।
- अपने मोबाइल फोन को भी सुरक्षित रखना आवश्यक है क्योंकि आपका मोबाइल नंबर आपके बैंक खाते के साथ जुड़ा होता है। अपने मोबाइल फोन को खोलने के लिए हमेशा एक जटिल पासवर्ड प्रयोग करें तथा एक अच्छा एंटीवाइरस सॉफ्टवेयर इन्स्टाल करें।

3. आपकी सोशल नेटवर्किंग प्रोफाइल्स की सुरक्षा के उपाय

आजकल हम सभी फेसबुक, ट्वीटर, इन्स्टाग्राम आदि जैसी सोशलनेटवर्किंग साइट्स का अधिकाधिक प्रयोग कर रहे हैं। हम अपने मित्रों और रिश्तेदारों से अपना अपडेट या सेल्फी या तस्वीरें शेयर करना पसंद करते हैं। हम यह भी चाहते हैं कि हमारी पोस्ट/तस्वीरों और अपडेट्स पर लाइक्स और कमेंट भी मिले। हालांकि, सोशल नेटवर्किंग साइट्स ने हमें अपने रिश्तेदारों और मित्रों से जुड़ने में हमारी

मदद की लेकिन यदि हम सावधान न रहें तो गम्भीर साइबर खतरे भी हो सकते हैं जो हमें नुकसान पहुंचा सकते हैं।

यह कैसे काम करते हैं ?

साइबर क्रिमिनल्स और साइबर बुलीज हमें नुकसान पहुंचाने के लिए सोशलनेटवर्किंग साइट्स का प्रयोग करते हैं। आओ हम यह जाने कि सोशलनेटवर्किंग साइट से जुड़े ऐसे कौन से कॉमन साइबर खतरे हैं जो हमें नुकसान पहुंचा सकते हैं।

- साइबर क्रिमिनल आपकी छवि को नुकसान पहुंचाने के लिए या अन्य अवैध प्रयोजनों के लिए सोशलमीडिया पर आपका फेक अकाउंट बनाकर नेगेटिव बातें और अनुचित जानकारी शेयर कर सकते हैं। यह एक गम्भीर खतरा है जो किसी को भी नुकसान पहुंचा सकते हैं।
- सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर आजकल साइबर बुलिंग बहुत अधिक होने लगी है। साइबर बुलिंग आपको दुख पहुंचाने या अपमानित करने के लिए अभद्र या अशोभनीय संदेश भेजने के लिए सोशल मीडिया का प्रयोग कर सकते हैं।
- सोशल नेटवर्किंग साइटों पर शेयर किए गए लिंकों के जरिये ऑनलाइन धोखाधड़ी की जा सकती है। साइबर अपराधी मैलिशियस लिंक या मेलवेयर से युक्त कोई पोस्ट शेयर कर सकते हैं। यदि आपने उस लिंक पर क्लिक कर दिया तो आपका कंप्यूटर या मोबाइल संक्रमित हो सकता है।

आप खुद को और सोशलमीडिया अकाउंट्स को निम्नलिखित सुझावों द्वारा सुरक्षित रख सकते हैं:-

- अपने सोशलनेटवर्किंग अकाउंट को सुरक्षित रखने के लिए पहला जरूरी कदम यह है कि यह हैक न होने पाये या खतरे में ना पड़े।
- अपने सोशलमीडिया अकाउंट का पासवर्ड किसी से शेयर न करें। पासवर्ड शेयर करने से आपके अकाउंट का दुरुपयोग किया जा सकता है।
- आप जो कुछ भी सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर पोस्ट करते हैं, वह हर किसी को दिखाई देगा जब तक आप अपनी पोस्ट की एक्सेस को अपने मित्रों तक सीमित नहीं करेंगे।
- अंजान लोगों की फ्रेंड रिक्वेस्ट एक्सेप्ट न करें। कोई भी फ्रेंड रिक्वेस्ट एक्सेप्ट करने से पहले यह देख लें कि रिक्वेस्टर को और कितने लोग फॉलो कर रहे हैं या उसकी फ्रेंड लिस्ट में कितने लोग हैं।
- साइबर अपराधी आपके जानकारी व्यक्ति का फेक अकाउंट बना सकते हैं। इसलिए सतर्क रहें।

- आप सोशल मीडिया पर जो भी पोस्ट करते हैं आमतौर पर वह वहीं पर रहता है। अतः सोशल मीडिया पर कुछ भी पोस्ट करने से पहले सावधानी बरतें। ध्यान रखें की यह जानकारी किसी के साथ भी शेयर हो सकती है। अपने निजी विवरण जैसे पता, फोन नंबर, जन्मतिथि आदि सोशल मीडिया साइट पर शेयर न करें।

4. ऑनलाइन गेमिंग

हैरानी की बात है कि ऑनलाइन गेमिंग साइबर सुरक्षा से कैसे संबन्धित है? मैं आपको बताता हूँ कि अधिक से अधिक बच्चे और युवा ऑनलाइन गेम खेल रहे हैं और भविष्य में यह संख्या बढ़कर कई गुना होने वाली है। जहां कहीं भी इंटरनेट यूजर्स की संख्या ज्यादा है, साइबर अपराधी उनको शिकार बनाने का रास्ता ढूंढ़ लेते हैं। यह धोखाधड़ी, साइबर बुलिंग, अनुचित विषयों को साझा करने आदि के खिलाफ है।

क्या आप जानते हैं कि ऑनलाइन गेम्स के साथ स्पैम, वाइरस भी डाउनलोड हो जाएंगे जो आपके कंप्यूटर या मोबाइल फोन या गेमिंग कौनसोल को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर सकते हैं? प्रख्यात साइट्स से गेम डाउनलोड करना ही सही है। कभी भी अवैध गेम्स और सॉफ्टवेयर डाउनलोड और इन्स्टाल न करें।

उपलब्ध ऑनलाइन गेम्स की रेंज और विश्वभर में करोड़ों प्लेयर्स के साथ खेलने की सुगमता को ध्यान में रखते हुए कहा जा सकता है कि ऑनलाइन गेमिंग दूसरों से जुड़ने में आपके लिए मनोरंजक हो सकता है, परंतु वास्तव में आपके लिए इससे जुड़े जोखिमों को समझना और कतिपय परिस्थितियों से निपटने की जानकारी होना महत्वपूर्ण है। ऑनलाइन गेमिंग अनुभव का आनंद लीजिए और मजे कीजिए, परंतु यह सुनिश्चित कर लीजिए कि आप सुरक्षित खेल रहे हैं।

क्या आप जानते हैं कि ऑनलाइन गेमिंग से जुड़े हुए जोखिम कौन कौन से हैं?

- ऑनलाइन आक्रमक खिलाड़ियों की संख्या अधिक है जो आपको डरा धमका सकते हैं। कुछ खिलाड़ी दूसरों को डराने धमकाने या परेशान करने के लिए ही खेलते हैं। वे अशोभनीय भाषा का प्रयोग कर सकते हैं या दूसरों को धोखा दे सकते हैं। आपके लिए सतर्क रहना बहुत महत्वपूर्ण है।
- बहुत से व्यस्क और साइबर अपराधी भी ऑनलाइन गेम खेलते हैं और बालक होने का बहाना करते हैं। वे आपको गेमों के बारे में टिप्स देकर, आपके साथ पॉइंट साझा करके आपके साथ दोस्ती करने का प्रयत्न करते हैं। इस अवसर का प्रयोग करके वे आपकी व्यक्तिगत सूचना प्राप्त करके अथवा आपसे अकेले में मिलकर आपको कोई घोटाला करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।

- बहुत से ऑनलाइन गेम्स में आपको पॉइंट/सिक्के आदि खरीदने के लिए कहा जाता है जिन्हें खेल में सुधार के लिए अथवा समय या साधनों के अनुसार आपको फायदा देने के लिए उपयोग किया जाता है। आपसे भुगतान के लिए क्रेडिट कार्ड का विवरण साझा करने के लिए कहा जाता है। हालांकि कुछ संक्रमित ऑनलाइन गेम्स आप के क्रेडिट कार्ड का ब्यौरा प्राप्त कर सकते हैं और इसका दुरुपयोग कर सकते हैं।

आप स्वयं को कैसे सुरक्षित रख सकते हैं ?

- ऑनलाइन गेम खेलते समय दूसरे खिलाड़ियों के साथ अपनी व्यक्तिगत सूचना जैसे नाम, जन्म तिथि, पता और दूरभाष संख्या साझा न करें क्योंकि आपको पता नहीं होता है कि वे खिलाड़ी कौन हैं और उनकी मंशा क्या है? हो सकता है आप अपनी जानकारी घोटालेबाजों या साइबर बुलीज के साथ साझा कर रहे हैं।
- जब आप ऑनलाइन गेम खेल रहे हो तो अपने क्रेडिट कार्ड का ब्यौरा किसी के साथ साझा न करें।
- अप्रतिष्ठित निःशुल्क ऑनलाइन गेमिंग वेबसाइट से डाउनलोड किए गए गेमों को कभी भी इंस्टॉल न करें। मेल अथवा टेक्स्ट मैसेज अथवा पॉप-अप के माध्यम से प्राप्त लिंक पर क्लिक करके कभी भी गेम डाउनलोड नहीं करें। हो सकता है आप वाइरस और मालवेयर डाउनलोड कर लें जो आपके कंप्यूटर अथवा स्मार्ट फोन की सुरक्षा के लिए खतरा बन सकते हैं।
- अपने कंप्यूटर, स्मार्ट फोन या हाथ में रखे जाने वाले किसी अन्य यंत्र पर हमेशा अच्छा एंटीवायरस इंस्टॉल करें और उसको नियमित रूप से अपडेट्स करत रहें।
- अपना पासवर्ड किसी को न बताएं। आपको अपना ऑनलाइन गेमिंग अकाउंट और अन्य ऑनलाइन अकाउंट के लिए जटिल पासवर्ड रखना चाहिए। अच्छा हो कि आप अपना पासवर्ड नियमित रूप से बदलते रहें।

आप लोगों के लिए कुछ जरूरी सुझाव

- साइबर सुरक्षा, नए खतरों और साइबर अपराधों से बचने के उपायों के बारे में अत्यधिक जानकारी लें।
- अच्छे साइबर सिटिजन बनें- साइबर सुरक्षा के लिए एहतियात बरतें और अपने मित्रों और परिवार को भी बताएं।
- सुरक्षित साइबर पद्धतियों पर नियमित रूप से अपडेट्स के लिए <https://intranet.psb.co.in@ITSecurity.aspx> का विजिट करें।

सहायक महाप्रबंधक (सी.आई.एस.ओ.)

ਸਵਚੱਥ ਭਾਰਤ ਅਭਿਯਾਨ



ਬੈਂਕ ਦੇ ਪ੍ਰਧਾਨ ਕਾਰਜਾਲਯ ਮੈਂ ਸਵਚੱਥਾ ਅਭਿਯਾਨ ਦੇ ਅੰਤਰਗਤ ਸਵਚੱਥਾ ਪਥਵਾਡੇ ਕਾ ਆਯੋਜਨ ਕਿਆ ਗਯਾ। ਨ ਕੇਵਲ ਬੈਂਕ ਮੈਂ ਬਲਕਿ ਬੈਂਕ ਹਾਊਸ ਦੇ ਆਸਪਾਸ ਦੇ ਪਰਿਸਰ ਕੋ ਭੀ ਸਾਫ ਕਿਆ ਗਯਾ। ਬੈਂਕ ਦੇ ਪ੍ਰਬੰਧ ਨਿਵੇਸ਼ਕ ਏਵੰ ਮੁਖਯ ਕਾਰਯਕਾਰੀ ਅਧਿਕਾਰੀ ਸ਼੍ਰੀ ਏਸ. ਹਰਿਸ਼ੰਕਰ ਏਵੰ ਕਾਰਯਕਾਰੀ ਨਿਵੇਸ਼ਕ ਡਾੱ. ਫਰੀਦ ਅਹਮਦ ਏਵੰ ਸ਼੍ਰੀ ਗੋਵਿੰਦ ਏਨ ਡਾੱਗ੍ਰੇ ਨੇ ਭੀ ਅਨਯ ਸਟਾਫ ਸਦਸਯੋਂ ਦੇ ਸਾਥ ਸਵਚੱਥਾ ਅਭਿਯਾਨ ਮੈਂ ਬਡ-ਚਡਕਰ ਸਹਭਾਗਿਤਾ ਕੀ।



सेवानिवृत्ति



प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग के उप महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री संजीव श्रीवास्तव जी दिनांक 31/10/2019 को बैंक की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए।

हमें इनपर गर्व है-



प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग में कार्यरत विभाष कुमार, राजभाषा अधिकारी द्वारा रचित कविता संग्रह 'उड़ान' के साथ बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एस. हरिशंकर, कार्यकारी निदेशक डॉ फरीद अहमद श्री गोविंद एन. डोग्रे एवं बैंक के अन्य उच्चाधिकारी गण एवं स्वयं विभाष कुमार

राजभाषा शील्ड



वर्ष 2018-19 की, बैंक की राजभाषा शील्ड "ख" क्षेत्र में श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए औचलिक कार्यालय लुधियाना को प्रदान की गई। महाप्रबंधक श्री राजीव रावत एवं सुश्री हरविन्दर सचदेवा, औचलिक प्रबंधक लुधियाना- सुश्री रश्मि क्वात्रा को राजभाषा शील्ड प्रदान करते हुए।



वर्ष 2018-19 की, बैंक की राजभाषा शील्ड "ग" क्षेत्र में श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए औचलिक कार्यालय कोलकाता को प्रदान की गई। महाप्रबंधक श्री राजीव रावत एवं सुश्री हरविन्दर सचदेव, औचलिक प्रबंधक कोलकाता- श्री कामेश सेठी को राजभाषा शील्ड प्रदान करते हुए।

ग्राहक सेवा एवं छुट्टियाँ

एक बैंकर को यदि आर्थिक या वित्तीय सिपाही या सैनिक कहा जाए तो शायद गलत नहीं होगा क्योंकि दोनों में बहुत सी समानांतर बातें हैं। जैसे दोनों को देश के कोने-कोने में भेजा जाता है और विषम परिस्थितियों में उन्हें कार्य करना पड़ता है। गोली एक सैनिक को भी लग सकती है और एक बैंक अधिकारी को भी चार्जशीट या अन्य किस्म का दंड मिल सकता है। बस इतना जरूर है कि सैनिकों को गोली लगते ही उन्हें पता चल जाता है परंतु बैंक अधिकारियों से गलतियाँ हो जाती हैं और उन्हें इसका एहसास काफी दिनों के बाद होता है अर्थात् गलती आज होती है और दंड पाँच वर्ष बाद भी हो सकता है जबकि सैनिकों को गोली लगते ही पता चल जाता है और उसका इलाज करना पड़ता है।

सैनिकों को छुट्टियाँ काफी जदोजहद के बाद मिलती हैं, उसी तरह बैंक अधिकारी को भी छुट्टियाँ कम मिलती हैं। आज हम विश्लेषण करते हैं अधिकारियों को अधिक छुट्टियाँ देने से बैंक के ग्राहक को क्या हानि होती है। इस विश्लेषण का आरंभ हम एक घटना से करते हैं जो कि एक आई. आई. एम. लखनऊ के एक प्रोफेसर ने हमारे बैंक द्वारा आयोजित वर्कशॉप के दौरान लोगों को बताया और कहा "Customer pays our salary", "ग्राहक हमें तनखा देता है।" उस प्रोफेसर ने एक सच्ची घटना किसी सरकारी बैंक की बतायी जहाँ उनका खाता था।

प्रोफेसर एक दिन अपनी बैंक शाखा में पासबुक अपडेट करने के लिए गया जहाँ उसे पता चला आज पासबुक अपडेट नहीं होगी क्योंकि जो व्यक्ति पासबुक अपडेट करता है उस व्यक्ति के पिता जी गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती हैं और वो 2 दिनों के बाद आएंगे। अतः प्रोफेसर साहब दो दिन बाद पुनः शाखा गए तब पड़ोस में बैठे बैंक अधिकारी ने उन्हें बताया कि जिस अधिकारी के पिता जी गंभीर थे उनका देहांत हो गया है। अतः आप अगले सोमवार आपकी पासबुक अपडेट अवश्य करा लीजिएगा। अगले सोमवार प्रोफेसर साहब बेचारे फिर बड़ी उम्मीद से गए पता चला वह व्यक्ति फिर नहीं आया क्योंकि उसके पिता जी का आज श्राद्ध है। वहीं बगल वाले अधिकारी ने अफसोस जाहिर करते हुए उनसे फिर बुधवार को आने को कहा और माफी भी मांगी। प्रोफेसर साहब क्या करते एक पासबुक ही तो अपडेट करना था चलिए अगले दिन ही सही।

बुधवार को जब प्रोफेसर साहब पहुंचे तो देखा वह व्यक्ति मौजूद था परंतु शकल किसी पतझड़ में मुरझाए बिन पत्तियों के पेड़ की तरह थी। अब प्रोफेसर साहब की इतनी हिम्मत नहीं हुई कि उनसे पासबुक अपडेट कराने जैसे छोटे कार्य को कहा जाए। नतीजा यह कि वह प्रोफेसर साहब कभी भी इस घटना को नहीं भूलते हैं।

उपरोक्त पूरी घटना से एक बात बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है कि बैंक अधिकारियों के लिए छुट्टियाँ किस तरह से महत्वपूर्ण हैं और उनकी छुट्टियों से ग्राहक सेवा किस तरह से प्रभावित है। सरकारी बैंकों में अधिकारियों के छुट्टियों पर रहने से ग्राहक सेवा पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। कुछ बैंक अधिकारी, कर्मचारी बीस-बीस दिनों के लिए इकट्ठे छुट्टियों पर चले जाते हैं जिससे अन्य अधिकारियों पर उसका बोझ पड़ता है। फलतः कुछ दिन के लिए अन्य अधिकारी भी छुट्टियों पर जाने की मांग करते हैं जिससे ग्राहक सेवा पूर्णतः बाधित हो जाती है और ग्राहक चुपके से उस बैंक को छोड़ कर अन्य जगह खाता ट्रांसफर कर लेता है।

एक बार एक शाखा प्रबंधक मुझसे कहने लगा सर दो स्टाफ चाहिए मैंने कहा क्यों तुम्हारे पास तो पहले से चार अधिकारी एवं दो क्लर्क हैं तो वह कहने लगा

सर एक क्लर्क रिटायर होने वाला है और एक 15 दिनों से नहीं आ रहा है। एक महिला अधिकारी मैटरनिटी लीव पर है एवं दूसरी की माँ बीमार है, तीसरे अधिकारी का एक्सीडेंट हो गया है और पिछले सात दिनों से वह नहीं आ रहा है। मैंने पूछा तो शाखा कैसे चला रहे हो, तो वह कहने लगा सर मैं खुद काउंटर पर बैठता हूँ। मैंने कहा यदि तुम्हें दो स्टाफ और दे दिये जाए तो वो भी किसी न किसी बहाने छुट्टियों पर चले जाएंगे, तो फिर क्या करोगे? कहने का तात्पर्य यह है कि बेतहाशा छुट्टियाँ बैंक की ग्राहक सेवा को बर्बाद कर देती हैं।



कामेश सेठी

सबसे ज्यादा दिक्कत आ रही है महिलाओं के "मैटरनिटी लीव" से। बैंकों में स्टाफ पोस्टिंग MPP "मैन पावर प्लानिंग" के आधार पर होती है लेकिन महिलाओं के मैटरनिटी लीव पर चले जाने से सारी प्लानिंग धरी की धरी रह जाती है। इसके लिए आवश्यक है जितनी महिला स्टाफ हैं, उसके लिए 20% अधिक स्टाफ की व्यवस्था पहले से ही कर लेनी चाहिए।

एक महिला ग्राहक ने मुझे एक दिन शिकायत की कि आपकी एक शाखा में मेरा खाता है और मैं परेशान हो गई हूँ, जब जाती हूँ एक महिला अधिकारी छुट्टी पर रहती है और जब मैंनेजर के बारे में पूछती हूँ वह भी छुट्टी पर रहते हैं। आप कोई कार्यवाही उनके विरुद्ध क्यों नहीं करते? मैंने सोचा बात तो उसकी सही है लेकिन छुट्टी लेना एक कर्मचारी का अधिकार भी है। हम किसी को छुट्टी लेने के लिए एक सीमा तक ही रोक सकते हैं। उपरोक्त सभी बातों को गौर करने से एक बात बिल्कुल स्पष्ट है कि अधिक छुट्टियों का ग्राहक सेवा पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

वास्तविकता यह है कि आजकल स्कूलों में भी बच्चों को पहले की तरह अधिक छुट्टियाँ नहीं दी जाती हैं। यदि आज स्कूल में बच्चे के लिए 18 दिनों से 20 दिनों की छुट्टियाँ मांग ली जाये तो स्कूल वाले नाराज हो कर मना कर देते हैं और कहते हैं-अपने बच्चे को किसी अन्य विद्यालय में पढ़ा लीजिए। जब स्कूलों में छुट्टियाँ कम मिलने लगी हैं तो जाहिर है बैंक में एक साथ अधिक छुट्टी नहीं देनी चाहिए। सभी स्टाफ को यह सोचना चाहिए कि छोटी-छोटी बातों पर छुट्टियाँ न ली जाएँ जैसे कि सिर में दर्द, जुकाम, पड़ोस में मौत, बच्चे की परीक्षा, बिजली का बिल, टेलीफोन लगवाना, घर में पुताई करवाना इत्यादि और भी बहुत सी छोटी-छोटी बातें जिसको की नजर अंदाज किया जा सकता है। शादियों में, घूमने-फिरने में तीस-तीस दिनों की छुट्टियाँ बैंक के प्रति उदासीनता दिखलाता है।

निष्कर्ष यही है कि सरकारी बैंक में अधिक छुट्टियाँ ग्राहक सेवा को बुरी तरह से प्रभावित करता है। प्राइवेट बैंक अधिक छुट्टी लेने पर बैंक से बाहर कर देते हैं लेकिन सरकारी बैंक में यह संभव नहीं है। लेकिन इस पर लगाम कसी जा सकती है। कुछ APAR में नंबर काट कर या प्रमोशन में वरीयता न देकर। अंत में यही कहना है कि सभी कर्मचारियों, अधिकारियों को अवकाश पर जाने से पहले ग्राहक सेवा का ध्यान अवश्य रखना चाहिए और याद रखना चाहिए कि हम एक सेवा क्षेत्र में कार्यरत हैं और अपने ग्राहकों को सेवा प्रदान करना हमारा धर्म है।

ऑचलिक कार्यालय, कोलकाता

हिंदी/क्षेत्रीय भाषा में कार्यशाला



आंचलिक कार्यालय, कोलकाता



आंचलिक कार्यालय, लुधियाना



आंचलिक कार्यालय, जयपुर



सहभागी

निरीक्षण

दिनांक 27.12.2019 को हमारे अंचल गुरुग्राम का श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग (उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, दिल्ली-1) द्वारा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के उपरांत राजभाषा कार्यान्वयन की विशेष बैठक/विचार-विमर्श का आयोजन भी किया गया था।



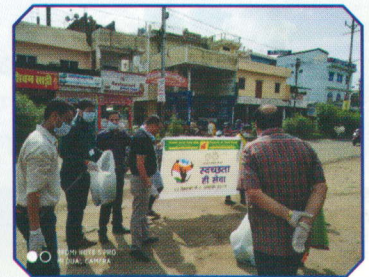
सहायक निदेशक महोदय का पुष्प गुच्छ द्वारा सम्मानित करते हुए अंचल के मुख्य प्रबंधक श्री हरजिन्दर सिंह एवं नरेश कुमार तथा साथ में हैं बाई ओर राजभाषा अधिकारी श्री रूप कुमार।



राजभाषा समीक्षा के दौरान स्टाफ को राजभाषा अधिनियम/नियमों की जानकारी देते सहायक निदेशक महोदय।

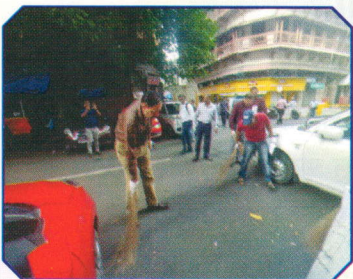
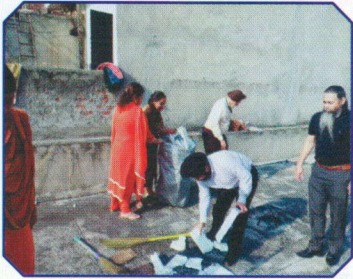
स्वच्छ भारत

बैंक के विभिन्न आंचलिक कार्यालयों तथा शाखाओं ने स्वच्छ भारत अभियान के



ਅਭਿਆਨ

ਅੰਤਰਗਤ ਨ ਕੇਵਲ ਬੈਂਕ ਬਲਿਕ ਆਸ-ਪਾਸ ਕੇ ਪਰਿਸਰ ਕੋ ਸਵਚਛ ਬਨਾਨੇ ਮੈਂ ਸ਼ਰਮਦਾਨ ਕਿਆ।



मराठी लेख

कैलास मानसरोवर यात्रा

माझी कैलास मानसरोवर यात्रा करणे हे माझे लहानपणापासूनचे स्वप्न होते। पण हा योग जुळून आला मे 2009 ला। आपल्या बँकेतील तीन सहकारी, स्वप्ना चाफेकर, अल्पना तळपदे व भारती वाघमारे। हांच्या बरोबर कैलासमानसरोवर यात्रेला निघालो। आमचा चाळीस जणांचा चमू होता। नेपाळमार्गे 15 दिवसाचा अतिशय कठीण पण तितकाच सुंदर स्वप्नवत् प्रवास। रौद्रभिषण सौंदर्य काय असते ते प्रत्यक्ष आनुभवले। 0 ते 5 डिग्री तापमानात रेंजरोव्हरमधून पाच दिवसांचा प्रवास करत आम्ही मानसरोवरला पोहोचलो। समुद्र सपाटीपासून 15000 फूट उंचीवर मानसरोवराचे

अतिशय सुंदर, पारदर्शक निळे पाणी मांधांता पर्वत आणि समोर साक्षात कैलास। त्याचे सरोवरात पडलेले प्रतिबिंब पाहून मन श्रद्धा व आनांदाचे भरून आले आणि नकळत कैलासाला साष्टांग प्रणिपात केला मानसरोवरात स्नान करताना एका भाग्यवान सहप्रवाश्याला गणपतीची छोटी शी मूर्ती मिळाली। मानसरोवराची

प्रदक्षिणा करून आम्ही तेथेच मुक्काम केला। येथून पुढे कैलासची 56 कि. ची तीन दिवसांची प्रदक्षिणा सुरु होणार होती। दुसऱ्या दिवशी सकाळी यमद्वारातून तीन प्रदक्षिणा करून आम्ही परक्रमेला सुरुवात केली। 15000 फूट उंची वरून

गणेशपर्वत, नंदी पर्वत पार करत आम्ही 16000 फूटावर असलेल्या दुसऱ्या कँपवर सांध्याकाळी पोहोचलो। दुसरा दिवस अत्यंत कठीण होता। आम्ही पहाटे 6 वाजताच चालायला सुरुवात केली। चहूकडे बर्फच बर्फ, तापमान 0 डिग्री, आक्सिजनच्या कमतरतेमुळे दहा पावले चालले तरी श्वास लागत होता। अतिशय उभी चढण पार करत दुपारी

१८५०० फूटावर असलेल्या डोलमापासला पोहोचलो। उजवीकडे कैलास, खाली दिसणारे गौरीकुंड सुंदर विलोभनीय निसर्ग चित्र परंतु आक्सिजनची कमी असल्याने तेथे न थांबता सर्वांनी उतरायला सुरुवात केली। पण अचानक आमचे एक सहप्रवासी गौरी कुंडजवळ हृदय बंद पडून कैलासवासी झाले सर्वांनाच प्रचांडि धक्का बसला। मन सुन्न झाले। दोन जण तिथे थांबले व बाकीच्यांनी उतरायला सुरुवात केली। व खाली असलेल्या एका कँपवर जाऊन



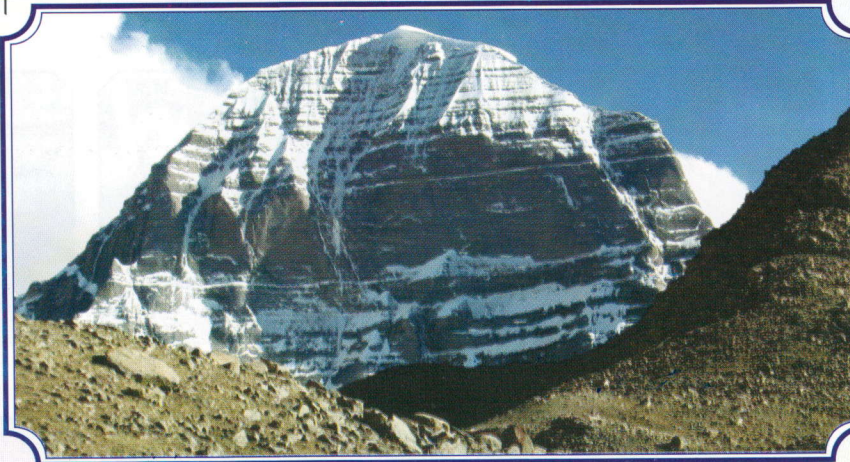
नम्रता उपाध्ये

थांबलो। आमची प्रिय मैत्रीण भारती। ही आपल्या ठाणे मुंबई शाखेची शाखा प्रबंधक होती आणि तीचे पती मागे राहिले होते। जवळजवळ दोन तासांनी दोघे खाली उतरताना दिसले। भारतीला श्वास घ्यायला त्रास होत होता। तीला धीर देऊन गरम चहा प्यायला दिला। आणि घोडयावर बसवून कँपपर्यंत आणले। रात्री गरम गरम सूप

पिऊन ती झोपली। पहाटे तीन वाजता ती आपल्या पतीचे नाव घेऊन जोरात ओरडली आणि शब्दशः कैलासवासी झाली। आम्ही सुन्न झालो। गेली 25 वर्षांची आमची मैत्री होती। एकीकडे कैलासमानसरोवर दर्शनाचा अलौकिक आनांद आणि दुसरी कडे जीवन आणि मृत्यूतील पुसटसे अंतर

एवढ्या जवळून अनुभवल्याने माझ्या जीवनाची दिशाच बदलली। हा दुर्गम यात्रेत लौकिकार्थाने काही गमावले पण असेही बरेच मिळाले जे माझ्यासाठी अमूल्य अलौकिक अविस्मरणीय आहे शब्दातीत आहे।

प्रधान कार्यालय, राजकोष विभाग



माछी लेख का हिंदी रूपांतर

मेरी कैलाश-मानसरोवर यात्रा

डॉ. नीरू पाठक

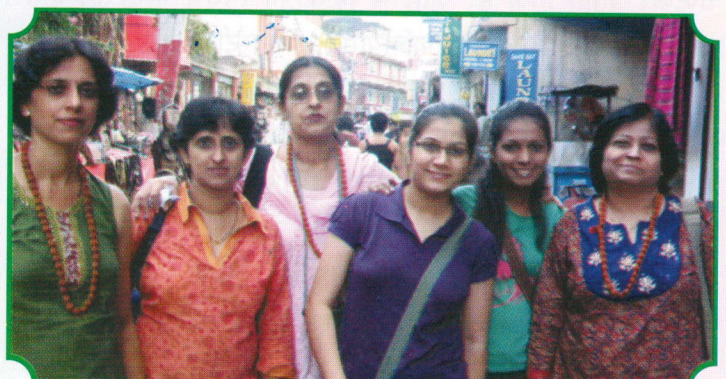
कैलाश मानसरोवर की यात्रा करना, मेरा बचपन का सपना था। जो पूरा होगा ऐसा मैंने सोचा भी नहीं था। मई 2009 में अपने बैंक की तीन अन्य सहकर्मियों सुश्री स्वप्ना चाफेकर, अल्पना तळपदे तथा भारती वाघमारे के साथ कैलाश मानसरोवर की यात्रा के लिए हम निकले। हमारा कुल 40 यात्रियों का ग्रुप था। नेपाल मार्ग से 15 दिनों का यह प्रवास अतिशय कठिन किंतु उतना ही सुन्दर था। मन में भय भी लगता रहा किंतु वहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता मन को मोह रही थी। दिन में शून्य से पाँच डिग्री तापमान में जीप से हम नेपाल से मानसरोवर पहुँचे-समुद्रतल से

15000 फीट की उँचाई पर मानसरोवर झील का पारदर्शी नीला जल, साथ ही बर्फ से ढका मान्धाता पर्वत और सामने साक्षात कैलाश पर्वत। मानसरोवर के पवित्र जल में कैलाश पर्वत का प्रतिबिंब देख सभी यात्रियों का मन श्रद्धा और भक्ति से अभिभूत हो गया, आँखें श्रद्धा के जल से भर गयीं और सभी ने साष्टांग दंडवत प्रणाम किया। सभी ने मानसरोवर में स्नान किया और प्रथा के अनुसार सरोवर की मिट्टी भी ली। एक सहयात्री का परम सौभाग्य रहा कि उन्हें मिट्टी में ही गणपति की छोटी सी सफेद पत्थर की प्रतिमा प्राप्त हुई। इसके पश्चात सभी मानसरोवर की परिक्रमा की और उस दिन वहाँ कैंप लगाया और विश्राम किया। वहाँ से कैलाश पर्वत की 56 किलोमीटर की परिक्रमा करनी थी। अगले दिन प्रातः 6 बजे हमने यात्रा प्रारंभ की। सबसे पहले यमद्वार की तीन परिक्रमा करने के पश्चात ही यात्रा का शुभारंभ किया गया। 15000 फीट की उँचाई से गणेश पर्वत और नन्दी पर्वत को पार करके हम 16000 फीट की उँचाई पर अपने दूसरे कैंप में पहुँचे। तब तक शाम हो गयी थी। दूसरा दिन सबसे कठिन रहा। प्रातः 6 बजे फिर से यात्रा आरंभ की। चारों ओर बर्फ ही बर्फ,

तापमान शून्य डिग्री से भी नीचे। लगातार दस कदम चलना दुष्कर था। ऑक्सीजन की कमी से साँस फूल जाती थी। जैसे-तैसे दोपहर तक 18500 फीट की उँचाई पर स्थित डोलमा पास तक हम पहुँच ही गए। वहाँ से नीचे उतरना था, दायीं ओर कैलाश पर्वत, नीचे गौरी कुंड और चारों ओर बर्फ के पहाड़। अद्भुत नजारे थे कल्पना से भी परे किंतु यात्रा अत्यंत दुर्गम होती जा रही थी। ऑक्सीजन वहाँ बहुत ही कम थी, इसलिए सभी ने उतरना आरंभ कर दिया, हालत बिगड़ती जा रही थी और एक

सहयात्री यह सह नहीं पाए और हृदयगति रूकने से वही कैलाशवासी हो गए। माहौल गमगीन हो गया, दो यात्री उनके पास रूके और बाकी सभी ने उतरना आरंभ कर दिया और नीचे कैंप में पहुँच गए। मेरी परम सखी सुश्री भारती जो हमारी बैंक की शाखा थाना, मुंबई की शाखा प्रभारी थीं, और उनके पति काफी पीछे रह गए थे। तकरीबन दो घंटे के बाद वे हमें दूर से आते हुए दिखे। भारती को साँस लेने में तकलीफ हो रही थी। हम सबने उन्हें सात्वना दी और गरम-गरम चाय पिलायी। और घोड़े पर बिठाकर कैंप तक ले गए। रात में गरम सूप पीकर वह सो गयीं। सुबह तीन बजे वो जोर से अपने पति का नाम लेकर चिल्लायीं और वो भी कैलाशवासी हो गयीं। हम सभी बहुत घबरा गए। पिछले 25 वर्षों से मैं उनसे जुड़ी हुई थी।

एक ओर कैलाश मानसरोवर के दर्शन का अलौकिक आनंद और दूसरी ओर जीवन और मृत्यु के बीच की महीन दूरी को इतने निकट से देखना, इस सबने मेरी जीवन की दिशा को ही बदल दिया। इस दुर्गम यात्रा में मैंने कुछ लौकिक खोया लेकिन कुछ ऐसा भी पाया, जो मेरे लिए अमूल्य है, अलौकिक है, अविस्मरणीय है शब्दों से परे है।



हिंदी का सरलीकरण

भाषा विज्ञान किसी भाषा को सरल या कठिन नहीं मानता है बल्कि भाषा को केवल भाषा मानता है अर्थात् 'जाकी रही भावना जैसी; प्रभु मूरति देखी तिन तैसी' के अनुसार हिंदी की कठिनाईयाँ भी अपनी-अपनी भावना से प्रसूत हैं। इसलिए इसका कोई समाधान संभव नहीं है।

एक वर्ग संस्कृत से घनिष्ठता के कारण हिंदी को कठिन कहता है। इस वर्ग में उर्दू वाले लोग आते हैं। हिंदी और उर्दू के व्याकरण में कोई अंतर नहीं है। अतः इस वर्ग का असंतोष व्याकरण को लेकर नहीं बल्कि हिंदी के शब्द भंडार को लेकर है। हिंदी के शब्दों के बदले यदि अरबी-फारसी के शब्द रख दिए जाएं तो इस वर्ग को हिंदी से कोई शिकायत नहीं होगी।

हिंदी को कठिन कहने वाला दूसरा वर्ग अंग्रेजी वालों का है अर्थात् बाबू या साहब लोगों का है। ये लोग अंग्रेजी शासन-तंत्र के अंग रहे हैं। अंग्रेजी पढ़ी ही इसलिए कि वह शासन की भाषा रही है। इन्हें दफ्तर की भाषा की बनी बनाई लीक का अभ्यास हो गया है। इसलिए अंग्रेजी में काम करने में इन्हें असुविधा नहीं होती है। अभ्यस्त लीक से जरा भी इधर उधर चलने में इन्हें असुविधा होने लगती है। हिंदी शब्दों के प्रयोग में जो थोड़ा बहुत प्रयास अपेक्षित है, वह इन्हें कष्टकर प्रतीत होता है। अतः ये हिंदी का विरोध करते हैं। इन्हें प्रेसिडेंट, प्राइम मिनिस्टर, पार्लियामेंट, मिनिस्ट्री ऑफ एक्सपर्टनल अफेअर्स, मिनिस्ट्री ऑफ इनफॉर्मेशन एंड ब्रॉडकास्टिंग, मिनिस्ट्री ऑफ ट्रांसपोर्ट एंड कम्यूनिकेशन, एसेम्बली, कौंसिल, डिपार्टमेंट, सेक्रेटरी, डायरेक्टर, कमेटी, मीटिंग, सेशन, फाइल, ऑर्डर आदि शब्द इतने प्रचलन में हैं कि राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, संसद, विदेश मंत्रालय, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, परिवहन और संचार मंत्रालय, परिवहन, सचिव, निदेशक, समिति, बैठक, सत्र, संचिका,

आदेश आदि शब्द अजनबी अर्थात् कठिन लगते हैं। अंग्रेजी को कायम रखने के लिए यही वर्ग सब से अधिक सचेष्ट है और चूँकि अधिकार इन्हीं के हाथों में है, इसलिए हिंदी की प्रगति को रोकना इनके लिए आसान भी है।



केतन किशन

इस वर्ग में वे अध्यापक भी हैं, जो अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा पाए हुए हैं और अंग्रेजी में पढ़ाते भी हैं। दर्शन, अर्थशास्त्री, मनोविज्ञान, भौतिकविज्ञान, जीवविज्ञान, आयुर्विज्ञान, अभियांत्रिकी आदि विषयों की अपनी-अपनी पारिभाषिक शब्दावली है जो वर्षों के सतत प्रयोग से इन्हें आत्मसात हो चुकी है। अब अंग्रेजी को छोड़ हिंदी को अपनाने का अर्थ है उस समस्त शब्दावली का परित्याग और नवीन शब्दावली पर अधिकार करने का प्रयास, जो स्पष्ट ही श्रमसाध्य है और श्रम से बचना मनुष्य की सहज प्रवृत्ति होती है।

हिंदी की कठिनाई का तीसरा आधार है, उसका व्याकरण। हिंदी को इस दृष्टि से कठिन कहने वाले वे लोग हैं जो हिंदीतर भाषाभाषी हैं। इनके अनुसार हिंदी की जटिलता में दो उल्लेख हैं एक तो 'ने' का प्रयोग और दूसरी लिंग व्यवस्था। कुछ लोगों को लिपि के कारण भी हिंदी कठिन प्रतीत होती है। देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता को लेकर आज तक दो राय नहीं हुई। संसार में आज जितनी भी लिपियाँ प्रचलित हैं, उनमें देवनागरी सर्वोत्तम मानी जाती है। स्वनिम और संकेत का अर्थात् ध्वनि और लेखन का निर्बाध सहसंबंध भी बहुतों को देवनागरी का दोष प्रतीत होता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि इनमें एक भी वास्तविक कठिनाई नहीं है। अपने-अपने संस्कार, परम्परा और अभ्यास के आधार पर ये कल्पित या आरोपित हैं।



इन बातों की पृष्ठभूमि में सरलीकरण संबंधी कुछ प्रश्न उठते हैं।

1. सरलीकरण का अर्थ क्या है ?
2. सरलीकरण किसके लिए ?
3. सरलीकरण कौन करे ?

हमने ऊपर देखा कि हिंदी में कोई एक कठिनाई नहीं है। कठिनाई एक न होने से सरलीकरण का मार्ग भी एक नहीं हो सकता। जिन्हें अरबी-फारसी के शब्द अभिमत हैं, उन्हें अंग्रेजी के शब्दों से संतोष नहीं होगा और जिन्हें अंग्रेजी शब्दों का अभ्यास है, उनकी कठिनाई अरबी-फारसी के शब्दों से नहीं मिटेगी, फिर भारत की सभी भाषाएं, संस्कृत निष्ठ हैं क्योंकि संस्कृत यहाँ के साहित्य, संस्कृति, धर्म, दर्शन, कला, इतिहास की भाषा रही है। इसलिए हिंदी की संस्कृतनिष्ठता उसकी बोधगम्यता का अनिवार्य पक्ष है। इसका यह अर्थ नहीं कि अरबी-फारसी या अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों को भी हटा कर उनकी जगह अप्रचलित शब्दों का व्यवहार किया जाए, किंतु मूलतः भाषा संस्कृतनिष्ठ ही रखनी होगी।

कठिनाई की चर्चा के प्रसंग में एक बात प्रायः भुला दी जाती है कि भाषा का रूप विषय के अनुसार सरल या कठिन हुआ करता है। जिस प्रकार तरल वस्तु का अपना कोई आकार नहीं होता, उसे जैसे पात्र में रखा जाता है वैसा ही उसका आकार हो जाता है, उसी प्रकार भाषा का भी निश्चित रूप नहीं होता। दर्शन की भाषा वैसी नहीं होती जैसे अखबार की और न साहित्यालोचन की भाषा वह होती है जो विज्ञापन की। लेखक की रुचि, प्रवृत्ति, संस्कार, अध्ययन आदि से भी भाषा में रूपभेद हुआ करता है। प्रेमचंद और प्रसाद दोनों हिंदी के लेखक हैं, पर गोदान और तितली की भाषा का अंतर किसी पाठक से छिपा नहीं है।

सरलता के आग्रही यह भी भूल जाते हैं कि सरलता किसके लिए ? जिस तरह लेखकों का एक स्तर नहीं होता उसी तरह पाठकों का भी एक स्तर नहीं होता। तब किस स्तर के पाठक को ध्यान में रखकर सरलीकरण किया जाए? साक्षर से लेकर विद्वान तक पाठकों की श्रेणी में आते हैं। भाषा सरल कर देने से क्या विषय सरल हो जाएगा? यह भी विचित्र विरोधाभास है कि सरलीकरण का अर्थात् भाषा का स्तर गिराने की तो माँग की जाती है किंतु पाठक का स्तर उठाने की

चिंता किसी को नहीं है। प्रत्येक अंग्रेजी भाषी हवाईटैड का दर्शन और इलियट की कविता नहीं समझता पर हिंदी में जो कुछ लिखा जाए, उसे सभी समझ जाएँ। यह ऐसा अव्यावहारिक आग्रह है जिसका कोई समाधान नहीं। वस्तुतः सरलीकरण शब्द सुनने में जितना सरल मालूम होता है उतना सरल है नहीं। सच तो यह है कि लेखक, पाठक और विषय से निरपेक्ष उसकी सत्ता ही नहीं है।

एक बात और याद रखनी चाहिए कि भाषा कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे जैसे चाहें, काट-छांट दें। भाषा की अर्थात् उसके शब्द भंडार की, व्याकरण की एक विकास परंपरा होती है, जो बहुत कुछ जैव (ऑर्गेनिक) विकास से मिलती जुलती है। जैसे किसी मनुष्य का सरलीकरण उसके हाथ, पैर या सिर काट कर नहीं कर सकते, वैसे ही भाषा का सरलीकरण भी उसको विकलांग करके संभव नहीं है। अंग्रेजी की कठिनाइयाँ हिंदी की तुलना में कहीं अधिक हैं। वर्तनी की अवैज्ञानिकता और अस्वाभाविकता तो सर्वसम्मत है, पर उसके सरलीकरण की आवाज किसी ने कभी नहीं उठाई, न इस देश में और न उन देशों में जहाँ की वह भाषा है, क्योंकि भाषा का सरलीकरण ऐसा वायवीय प्रश्न है जिसे ठोस रूप देना आवश्यक है।

तीसरा प्रश्न कि सरलीकरण कौन करे? कोई व्यक्ति, संस्था या सरकार? किसी व्यक्ति का कहना, वह कितना भी समर्थ क्यों न हो, नहीं चल सकता। महात्मा गाँधी जैसे व्यक्ति ने भाषा के संबंध में जो कुछ कहा, उसे साहित्यकारों ने तो नहीं माना, स्वयं उनके अनुयायियों में से भी अनेक ने नहीं माने। जब महात्मा गाँधी का कहना नहीं चल सका तो किसका चलेगा? अब रही बात किसी संस्था की, तो इसमें भी वही कठिनाई है। संस्थाएँ अनेक हैं और परस्पर रागद्वेष की भी कमी नहीं है। यह भार कौन उठाए और उठाए भी तो उसके नियमन की बाध्यता क्या है? बची सरकार, तो उसके निर्णयों का भी विरोध होता है, जोरदार विरोध होता है। और जिसे सरकार कहते हैं वह व्यक्तियों के समूह के अतिरिक्त है भी क्या ? इसलिए ले दे कर बात वहीं की वहीं रह जाती है।

तात्पर्य है कि सरलीकरण की मांग सैद्धांतिक रूप में चाहे जितनी भी सरल हो, व्यावहारिक रूप में उतनी ही कठिन है।

आंचलिक कार्यालय, गुरुग्राम



हरिवंशराय बच्चन
(27.11.1907-23.01.2003)

मैं एक जगत को भूला,
मैं भूला एक जमाना,
कितने घटना-चक्रों में
भूला मैं आना-जाना,
पर सुख-दुख की वह
सीमा मैं भूल न पाया,
साकी,
जीवन के बाहर जाकर
जीवन मैं तेरा आना

कार्टून कोना

मुझाव
एस एम एस चार्ज क्यों ?
बैंक
अनलिमिटेड
एस एम एस बैंक
क्यों नहीं ले लेती..!



प्रदीप राय
सेवानिवृत्त मुख्यप्रबंधक



जरा सोचिए.....?

यह घटना कुछ दिन पहले
के अपने कार्यालय पहुंचने
मेंट्रो ली और जैसाकि
भरी हुई थी, मैं दरवाजे
खड़ा हो ही
गंतव्य की ओर



की ही है। राजेन्द्र प्लेस
के लिए मैंने जनकपुरी से
होता ही है मेंट्रो खचाखच
के पास किसी तरह से
गया। मेंट्रो तेजी से अपने
बढ़ती जा रही थी। मेरे पास ही एक



विपिन त्यागी

30-35 वर्ष का नौजवान कानों में लीड लगाए खड़ा था और कुछ गुनगुना
भी रहा था। कुछ देर के बाद मुझे उसकी स्थिति असामान्य सी लगी जैसे उसे

कुछ परेशानी हो। और तभी अचानक ही वह गिर पड़ा। मैं जब तक उसे पकड़ता वो बेहोश हो गया। तब

तक आस-पास के लोग भी उसके लिए चिंतित हो रहे थे, परंतु उसकी सहायता के लिए कुछ कर नहीं रहे थे। सब

एक दूसरे को कह रहे थे-अरे! कोई मेंट्रो का इमरजेंसी बटन दबावो, इसके जूते खोलो, अरे! इसे पानी के छींटे मारो। मैंने जल्दी से उसके जूते
को खोले उसके तलवे की मालिश करने लगा और जोर से चिल्ला कर पानी मांगा। एक 12-13 साल का लड़का जो स्कूल जा रहा था, वाटर
बोतल से पानी लेकर उस नौजवान के चेहरे पर पानी के छींटे मारा। उसे थोड़ा होश आया था। पूछने पर, सर में चक्कर आने का इशारा उसने
किया। तब तक राजौरी गार्डन मेंट्रो स्टेशन आ चुका था। मैं उसे लेकर उतरना चाह रहा था परंतु अकेले यह संभव नहीं था। मैंने वहां उपस्थित
लोगों की तरफ देखा परंतु कोई भी सहयोग के लिए आगे नहीं आया। तभी एक वृद्ध व्यक्ति आगे आकर उसको उठाने का प्रयास करने लगे।
हमदोनों ने उसे किसी तरह उठाकर मेंट्रो सहायता डेस्क तक पहुंचाया। कुछ देर के प्राथमिक उपचार के बाद वह शख्स अच्छा महसूस करने
लगा और मुस्कुराकर कर धन्यवाद दिया। उस दिन मैं कार्यालय कुछ विलंब से पहुंचा, लेकिन किसी जरूरतमंद के काम आने का संतोष मन में
था किंतु बार-बार यही विचार मन में आ रहा था कि अगर और लोगों की भांति मैं भी सिर्फ चिंता ही करता और उसे मेंट्रो हेल्प डेस्क तक
नहीं पहुंचाता तो क्या होता! वह व्यक्ति हम में से कोई भी हो सकता है, शायद मैं, आप या हमारा कोई बेहद अपना भी। मूक दर्शक न होकर
मनुष्यता के नाते ही मदद कीजिए, मैंने तो सोच लिया, आप भी जरा सोचिए?

प्रधान कार्यालय, महाप्रबंधक (मा.सं.वि.वि.) सचिवालय

बैंक के प्रधान कार्यालय में संविधान दिवस का आयोजन



भारत का संविधान

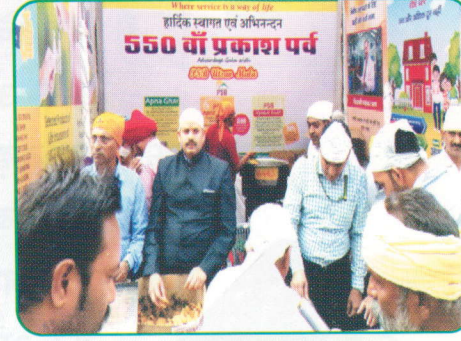
हम, भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न समाजवादी पंथ-निरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को: सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता



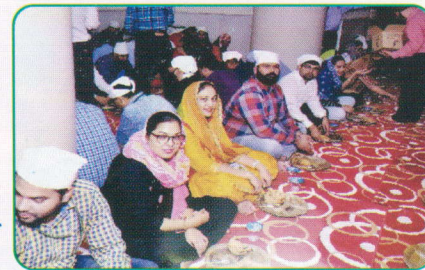
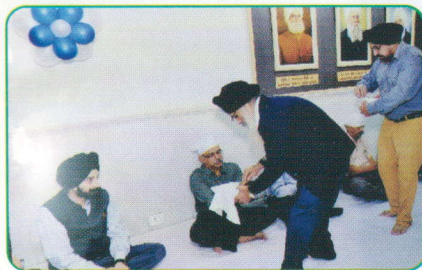
बढ़ाने के लिए दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई0 (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।



बैंक के विभिन्न आंचलिक कार्यालयों द्वारा भी गुरूनानक देव जी के 550वें प्रकाश पर्व को अत्यंत धूमधाम से मनाया गया। प्रस्तुत हैं कुछ झलकियाँ



ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਦੇ ਸੰਸਥਾਪਕ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਦੇ 550ਵੇਂ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਪਰਵ ਦੇ ਅਵਸਰ
ਪਰ ਪ੍ਰਧਾਨ ਕਾਰਜਾਲਯ ਮੇਂ ਕੀਰ੍ਤਨ ਏਵੰ ਲੰਗਰ ਕਾ ਆਯੋਜਨ ਕਿਆ ਗਯਾ।



नराकास उपलब्धियाँ



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), नागपुर द्वारा हमारे बैंक की नागपुर शाखा को राजभाषा के क्षेत्र में श्रेष्ठ राजभाषा कार्य निष्पादन के लिए तृतीय पुरस्कार दिया गया। राजभाषा शील्ड तथा प्रमाण-पत्र के साथ शाखा प्रभारी सुश्री चन्द्राणी तथा अन्य स्टाफ सदस्य।



बैंक नगर भाषा कार्यन्वयन समिति, नोएडा द्वारा हमारे बैंक के वरिष्ठ प्रबंधक श्री दीपक भार्गव को बैंकिंग शब्दावली प्रतियोगिता में पुरस्कार (प्रमाण-पत्र) देते हुए श्री अनूप मलिक, उप निदेशक (का.) गृह मंत्रालय भारत सरकार एवं सुश्री ममता, अध्यक्ष नराकास (नोएडा)।

फूलों का महाकुंभ

हम सब यह जानते हैं कि महाकुंभ का मेला 12 साल के बाद लगता है किंतु एक फूल ऐसा भी है जो 12 वर्षों के अंतराल के बाद खिलता है। ऐसा दुर्लभ फूल कैसा होगा, उसे देखने की इच्छा मन में बरबस ही उठती है। यह फूल देखने में कैसा होगा, किस रंग का होगा, कहाँ पाया जाता है ऐसे असंख्य सवाल मन में आते रहते थे। वर्ष 2018 में आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने स्वतंत्रता दिवस के मौके पर लाल किले की प्राचीर से अपने भाषण में इस फूल का जिक्र किया और यही बात कही। वर्ष 2018 में केरल की नीलगिरी की पहाड़ियों पर यह फूल खिले थे, नाम है नीलकुंजिरी। पहाड़ियों का नाम इन फूलों से ही पड़ा। या फूलों का नाम पहाड़ियों के नाम पर। पर दोनों ही एक-दूसरे के पर्याय हैं। इन फूलों का रंग जामुनी होता है। दक्षिण भारत में मुन्नार की पहाड़ियों पर जुलाई के अंत से नवंबर तक जैसे जामुनी रंग की फूलों की चादर जैसी बिछी रहती है। इनकी लोकप्रियता देखते हुए और पर्यटन बढ़ाने को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2006 में यहाँ कुरिंजिमाला फ्लावर सेक्चुरी बनाई गयी और उसी के तहत इन फूलों का संरक्षण किया जाता है। फूलों की इस दुर्लभ प्रजाति का वैज्ञानिक नाम स्ट्रोविलैथस कुथियाना है। पूरे विश्व में इनकी लगभग 450 प्रजातियाँ हैं जिनमें से 146 भारत में पाई जाती हैं और इन 146 में से 43 केरल राज्य में पाई जाती हैं। प्रकृति का कैसा अनूठा नियम है कि इन फूलों के पौधे केवल 60 सेंटीमीटर तक ही बढ़ते हैं और वहीं अपनी अनोखी, अनूठी आभा लिए समय के साथ खड़े-खड़े सूख भी जाते हैं और वहीं अपने बीज भी गिरा देते हैं। लेकिन प्रकृति का नियम देखिए कि फिर से फूल आने में 12 वर्ष का लंबा समय लगता है। वर्ष 2018 में केरल में बाढ़ की विभीषिका ने पर्यटन को भी प्रभावित किया और प्रकृति प्रेमियों को अत्यंत निराशा का सामना करना पड़ा और इस अनुपम

दृश्य को देखने की इच्छा मन में ही रह गयी।

लेकिन कहा गया है कि जहाँ चाह वहाँ राह। ईश्वर ने प्रकृति-प्रेमियों को निराश नहीं किया। हमारा देश भारत विविधता के लिए जाना जाता है। भिन्न-भिन्न जलवायु, खान-पान, पहनावा, भाषा-भाषी,



कहीं गगनचुंबी पहाड़, कहीं डॉ. नीरू पाठक

अनवरत अथाह जल लिए निरंतर बहती नदियाँ, कहीं बर्फ से ढके पहाड़, कहीं दूर तक रेगिस्तान। किंतु इस विविधता में एकता ही हमारी पहचान है तभी तो कहाँ केरल की मुन्नार की नीलगिरी पहाड़ियाँ सुदूर दक्षिण में और कहाँ उत्तर में उत्तराखंड राज्य में उत्तरकाशी और टिहरी जिले के जंगल, नीलकुंजिरी की छटा यहाँ भी देखते ही बनती है। यहाँ मुन्नार की पहाड़ियों जैसे नजारे नहीं लेकिन अंतर इतना ही है जैसे उपवन और जंगल में। उपवन में व्यवस्थित सुंदरता यदि मन मोहती है तो जंगल की अनछुही प्राकृतिक छटा भी मन को मोह लेती है। वर्ष 2019 में नीलकुंजिरी की बहार ने उत्तराखंड को चुना। उत्तरकाशी में सड़क के दोनों ओर मानो नीलकुंजिरी की बहार छाई है। जामुनी रंग के फूलों की ऐसी छटा चहुं ओर बिखरी है कि पत्ते और टहनियों का हरा रंग मानों छिप ही गया है यह दुर्लभ फूल समुद्रतल से 1100-1500 मीटर तक की ऊँचाई पर उत्तराखंड के पहाड़ों पर पाया जाता है। अंतराल 12 वर्षों का ही है। और समय भी जुलाई से नवंबर तक का ही है। इसलिए मौका हाथ से जाने न दें और लेख के माध्यम से ही सही मेरे साथ नीलकुंजिरी फूलों के महाकुंभ में एक डुबकी अवश्य लगाएं और इसकी सुंदरता को अपने हृदय में महसूस करें।



प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग

निष्कर्ष

दोपहर के तीन बज रहे थे। महीने की गर्मी अपने पूरे शबाब पर थी। धूप से सर चकरा रहा था। प्यास के कारण गला सूख रहा था। फिर भी वो तेज कदमों से चलते हुए घर की तरफ बढ़ रही थी। पानी के नल सूख चुके हैं। बाजार में इक्का-दुक्का दुकानें ही खुली नजर आ रही हैं। अनीता ने धूप से बचने के लिए अपने मुह और सिर को अपने दुपट्टे से पूरी तरह ढक रखा था। माँ की मौत के बाद इस सिलाई स्कूल में उसे एक टीचर की नौकरी मिल गई थी वरना न जाने उसका क्या हाल होता। इसी तरह के विचारों के साथ वो उस गली में पहुँच गई जहाँ घर के नाम पर उसके पास एक छोटा सा कमरा था, जिसके एक तरफ एक पलंग लगा था दो पुरानी कुर्सियाँ और एक छोटा सा संदूक रखा था जिसमें अनीता के चार-पाँच जोड़ी कपड़े रखे थे। माँ की मौत के बाद यही उसका सरमाया था। उसने तीन बार घर के दरवाजे पर दस्तक दी परंतु दरवाजा खोलने कोई नहीं आया। फिर उसने जैसे ही दरवाजे को ढकेला चरमरा कर दरवाजा अपने-आप ही खुल गया। दरवाजे के एकदम सामने रसोईघर था जिसमें जरूरत के थोड़े से बर्तन रखे थे। रसोई के दोनों ओर कमरे थे जिनमें दाई ओर वाले कमरे में भाई और भाभी का सामान पड़ा था और बाई ओर वाले कमरे में अनीता का। भाई का कमरा अक्सर बन्द रहता क्योंकि वो भाभी के साथ ऊपर की मंजिल में रहता था। अनीता ने रसोई में जाकर नल से गिलास में पानी भरा जो कि गर्मी के कारण भरपूर गर्म था फिर भी अनीता ने उसके साथ अपनी प्यास बुझाने की कोशिश की। कमरे का पंखा खटखट की आवाज के साथ गर्म हवा कमरे में बिखरने लगा अनीता अपना झोला एकतरफ फेंक कर पलंग पर लेट गई। सामने लगी माँ की तस्वीर देखकर उसकी आँखों में आँसू आ गए। माँ के रहते गरीबी में भी जिंदगी कितनी मजेदार लगती थी। बाहर से आते ही माँ उसे और भाई को नींबू पानी पिलाती। जो कुछ घर में होता बड़े प्यार से खिलाती। माँ ने

जीवन में बहुत दुःख देखे थे। दोनों भाई-बहन बहुत छोटे थे जब पिता का साया सर से उठ गया। माँ ने बहुत संघर्ष से उन दोनों का पालन-पोषण किया। उसे पढ़ाई करने के बाद सिलाई जैसा हुनर सिखाया जिससे उसके जीवन में कोई समस्या न आए। रमन को भी जितना वो पढ़ाना चाहती थी पढ़ाया ताकि जब वो अच्छी नौकरी पर लगे तो अनीता की किसी अच्छे घर में शादी कर सकें और उसका अपना जीवन भी संवर सके। उसके बाद मेरे रिश्ते की तलाश शुरू हुई। जो माँ के जीते जी कभी पूरी नहीं हो पाई। फिर भाई के लिए रिश्ते आने शुरू हुए। एक जगह पता चला लड़की पढ़ी-लिखी है और स्कूल में टीचर है तो तुरंत रिश्ता पक्का हो गया और जल्द ही विवाह भी हो गया। लगभग दो महीने के अंदर ही नई दुल्हन ने हमें हमारी औकात दिखानी शुरू कर दी थी। उसके बुरे व्यवहार को सामने देखकर भी भाई कुछ ना बोलता। भाई और भाभी ने माँ की मौत का जिम्मेदार मुझे ठहराया। माँ की मौत के कुछ दिनों बाद मुझे एक सिलाई स्कूल में नौकरी मिल गई। भाभी मुझे अपशगुनी कहकर नीचे के कमरे में ताला लगा कर ऊपर की मंजिल पर चली गई और मैं नीचे माँ की यादों और फोटो के साथ अकेली रहने लगी। इन्हीं सब यादों के बीच न जाने अनीता को कब नींद आ गई थी। जैसे ही उसकी आँख खुली कमरे में चारों ओर अंधेरा फैला था उसने उठकर लाइट जलाने की भरपूर कोशिश की लेकिन शरीर साथ नहीं दे रहा था। बदन बुखार से पूरी तरह से तप रहा था। शरीर में जकड़न महसूस हो रही थी और गला प्यास से सूख रहा था। फिर भी उठना तो था ही कोई नहीं आएगा उसे पूछने। अतः वो लड़खड़ाते कदमों से उठी और लाइट जलाकर किचन की तरफ पानी पीने के लिए बढ़ गई। उसने भाई को



विनोद कुमार

उसे याद आया वो दिन
जब भाई की सरकारी नौकरी
का पत्र आया था। भाई के नौकरी
पर चढ़ते ही माँ ने पूरी गली में
मिठाई बाँटी थी।

आवाज देनी चाही लेकिन लगता था कि घर पर कोई नहीं है। उसने अपने लिए चाय बनाई और आधी सी पीकर बिस्तर पर लेट गई। पूरी रात वो बिस्तर पर बुखार की हालत में कराहती रही फिर उसे याद नहीं कि उसे कब नींद आ गई। सुबह जब उसकी आँख खुली तो रमन उसके बिस्तर के पास खड़ा उसपर चिल्ला रहा था।
- “नौ बज रहे हैं कुछ खबर भी है तुझे! घर के काम-काज में तो तू नकारी है ही कम से कम अपनी नौकरी का तो ध्यान रख; अगर स्कूल वालों ने निकाल दिया तो कौन तुझे घर पर बैठा कर तेरा खर्चा करेगा। उठ जा स्कूल से छुट्टी है तो घर पर ही कुछ हाथ हिला ले।” मुझे बहुत बुखार है। रमन ने एक सरसरी सी निगाह उस पर डालते हुए कहा, तो कल आते वक्त दवाई लेकर आना चाहिए था ना। आते हुए ठीक थी मैं- रात को ही हुआ, उठा भी नहीं जा रहा। रमन ने लगभग चिढ़ते हुए कहा ‘अब हम तुझे देखें या दफ्तर जाएँ।’

‘आप परेशान न हों मैं कुछ कर लूंगी आप अपने काम पर जाएँ। कहकर अनीता ने मुँह दूसरी तरफ घुमा लिया। उसे नहीं पता रमन कब चला गया। कुछ देर बाद सरला मौसी को अपने सामने पाया जो उसके माथे को छूकर उसे जगाने की कोशिश कर रही थी। सरला मौसी पड़ोस में ही रहती है माँ के बहुत करीब थी। ‘मैंने दरवाजा खुला देखा तो चली आई, अभी तक क्यों लेटी हो बेटी क्या हुआ।’

मौसी के इतने प्यार से पूछे जाने पर अनीता की आँखों से आँसूओं की झड़ी बह निकली। रोते-रोते उसने कहा, मौसी माँ के जाते ही सभी रिश्ते खत्म कैसे हो गए। बचपन में साथ खेले भाई-बहन भी आज एक-दूसरे पर बोझ हो गए। ‘नहीं बेटी ऐसा नहीं कहते-उठ हाथ मुँह धो ले मैं तेरे लिए दवाई लेकर आती हूँ। उठ चल आ जा। कहकर मौसी ने बिस्तर से उठने में उसकी मदद की। उसे चाय पिलाकर लिटा दिया और खुद डॉक्टर के पास दवाई लेने चली गई। तीन दिन तक सरला मौसी ने अनीता की अच्छे से देखभाल की। मगर खून के रिश्तों में ये गर्माहट न आई। चौथे दिन सरला

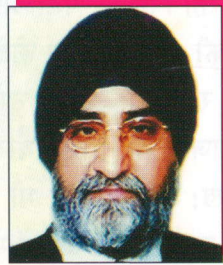
मौसी को अपनी बेटी के पास जाना पड़ गया। अनीता को सख्त आराम की हिदायतें देकर मौसी चली गई। अनीता पूरा दिन घर में पड़ी अपनी माँ को याद करती रही। मन ही मन सोचती रही कि माँ तुम होती मुझे भी अपने साथ ही ले जाती। इतना सोचते-सोचते न जाने उसे होश नहीं रहा। बस उसके दिमाग में एक ही बात रह-रह कर दस्तक दे रही थी कि उसका इस दुनिया में कोई नहीं, किसी को भी उसकी जरूरत नहीं। उसे बस अपनी माँ के पास जाना है। आँखों में आँसू लिए वो शहर से बाहर वाले इलाके की तरफ चल दी। जल्द ही उसके कदम ट्रेन की पटरी पर थे। अपनी पूरी शक्ति के साथ वो उस पटरी पर तेज-तेज कदम बढ़ाते हुए चल रही थी। दूर से उसे ट्रेन आती हुई दिखाई दे रही है- बस अब कुछ ही मिनट का फासला है और फिर वो हमेशा के लिए खत्म। ये देख अनीता

अपना सबकुछ भूलकर उसे बचाने के लिए दौड़ पड़ी अपनी पूरी ताकत से उसने उस बेसहारा लड़की को पटरी से खींचा, दोनों बुरी तरह से दूर जाकर गिरी। मौत धड़-धड़ करती हुई पटरी को पार कर गई। इतने में बहुत से लोग भी वहाँ जमा हो गए। किसी ने उस लड़की को पहचानते हुए बताया कि ये पास की ही एक बस्ती में रहती है। अनाथ है। पटरी पार करके काम पर जाती है। अकेली रहती है। उसका ऐसा साहस देखकर अनीता को खुद पर बहुत ग्लानि का एहसास हुआ। एक अपाहिज और अनाथ लड़की जब इतना संघर्ष करके जीने की

प्रबल इच्छा रखती है तो फिर मुझे तो ऐसा सोचना भी नहीं चाहिए बल्कि ऐसे दुःखी लोगों की मदद करनी चाहिए। जिससे उसका जीवन भी सार्थक हो सके। मन ही मन ऐसा फैसला कर उसने उस लड़की को उठाया बहुत सारा प्यार कर उसे उसके घर पहुँचाया। अगले दिन से और भी उसी तरह की बच्चियों की मदद करने की उसने ठान ली। उसने जीवन की सच्चाई को समझ लिया। वो जान गई कि जीवन में दूसरों को खुशियाँ देकर भी खुश रहा जा सकता है।

आंचलिक कार्यालय, लुधियाना

अपनी मंजिल की ओर
बढ़ ही रही थी कि उसने एक
ऐसी लड़की को पटरी में गिरे हुए
पाया जिसकी दोनों बैसाखियाँ घबराहट
के कारण छूट गई थीं और वो
सहायता के लिए जोर-जोर से
चिल्ला रही थी।



डॉ. चरनजीत सिंह



हम

तुम-
चुपचाप, दबे पाँव,
मदमस्त हिलोरे लेती
शीतल हवा के झोंके सी

तुम-
हृदय-तल पर ताल देती
मधुर-मधुर संगीत से सजी
स्वर लहरी सी

तुम-
चित्रकार की रंग-तालिका से
छटा बिखेरती, सौभ्य, शांत
सरल छवि सी

तुम-
अध्यात्म में डूबी
किसी मंदिर में सजी प्रतिमा सी

तुम-
किसी लेखक की कल्पना
कागज, कलम, स्याही से रची
अमर रचना सी

तुम-सर्वत्र
तुम-आकार
तुम-निराकार
तुम ही तुम
मेरी कल्पना, मेरा स्वप्न,
मेरी प्रेरणा।

अशकों से आग दिल की
बुझाते रहे हैं हम
ता-उम्र दाग दिल के
मिटाने रहे हैं हम

यूँ खुद को अपना हाल
सुनाते रहे हैं हम
दरपन से अपना चेहरा
छुपाते रहे हैं हम

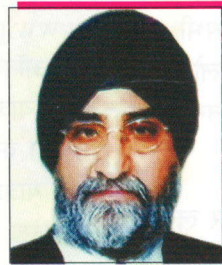
अपनों ने गम दिए हैं
तो हमने ये लब लिए
यूँ धोखे जान-बूझ के
खाते रहे हैं हम

मत पूछ हमसे, कैसे
गुजारी है जिंदगी
खुद को तमाम उम्र
रुलाते रहे हैं हम

बाकी निशां हमारा न
दुनिया में कुछ रहे
'सागर' शनाखत अपनी
मिटाने रहे हैं हम



ਗੁਜ਼ਲ



ਡਾ. ਚਰਨਜੀਤ ਸਿੰਹ



ਖ਼ਾਲੀ-ਖ਼ਾਲੀ ਦਿਲ ਦੀ ਬਸਤੀ
ਅਬ ਕੋਈ ਮੇਹਮਾਨ ਨਹੀਂ ਹੈ
ਬਸਤੇ-ਬਸਤੇ ਬਸਤੀ ਹੈ
ਏ ਕਾਮ ਇਤਨਾ ਆਸਾਨ ਨਹੀਂ ਹੈ

ਹਰ ਤੂਫ਼ਾਂ, ਸੇ ਹਮ ਗੁਜ਼ਰੇ ਹੈਂ
ਤਬ ਜਾਕਰ ਸਾਹਿਲ ਕੋ ਪਾਯਾ
ਜੋ ਇਨ ਆਂਖ਼ੋਂ ਸੇ ਬਾਕੀ ਹੋ
ਅਬ ਏਸਾ ਤੂਫ਼ਾਨ ਨਹੀਂ ਹੈ

ਪੈਰਾਹਨ ਪਰ ਦਾਗ ਨਹੀਂ ਹੈ
ਸਬਕੇ ਭੇਸ ਫਰਿਸ਼ਤੋਂ ਜੈਸੇ
ਇਸ ਬਸਤੀ ਮੇਂ ਸਬੀ ਫਰਿਸ਼ਤੇ
ਕੋਈ ਭੀ ਇਨਸਾਨ ਨਹੀਂ ਹੈ

ਤੇਰਾ ਹੁਕਮ ਮਿਲੇ ਜੋ ਮੁੜਕੋ
ਜੀਤ ਲੂੰ ਮੈਂ ਏ ਦੁਨਿਆ ਸਾਰੀ
ਤੇਰੇ ਹੁਕਮ ਸੇ ਬਢ ਕਰ ਮੁੜਕੋ
ਓਰ ਕੋਈ ਫਰਮਾਨ ਨਹੀਂ ਹੈ

ਸਾਰੀ ਦੁਨਿਆ ਦੇਖ-ਭਾਲੀ
ਜਾਨਾ ਤੋ ਏ ਜਾਨਾ 'ਸਾਗਰ'
ਉਨਕੇ ਪਹਲੂ ਮੇਂ ਦਮ ਨਿਕਲੇ
ਓਰ ਕੋਈ ਅਰਮਾਨ ਨਹੀਂ ਹੈ

ਦਰਵਾਜ਼ੇ ਕੀ ਚੌਖਟ ਸੇ ਗਲੀ ਕੇ ਮੋੜ ਤਕ
ਏਕ ਚੇਹਰਾ ਰੋਜ ਚੁਪਚਾਪ ਗੁਜਰ ਜਾਤਾ ਥਾ
ਓਰ ਕਬੀ ਉਨੀਂਦੀ ਰਾਤ ਕੋ ਮੇਰੇ ਦਰਵਾਜ਼ੇ ਪਰ
ਦਸਤਕ ਦੇਨੇ ਕੋ ਠਹਰ ਜਾਤਾ ਥਾ,
ਪਰ ਜਿਸ ਦਿਨ ਸੇ ਵੋ ਚੇਹਰਾ
ਗੁਮਨਾਮ ਸਫਰ ਪਰ ਗਯਾ ਹੈ
ਲੌਟ ਕਰ ਨਹੀਂ ਆਯਾ
ਸ਼ਾਯਦ ਰਾਹ ਮੇਂ ਮਰ ਗਯਾ ਹੈ
ਉਸ ਦਿਨ ਸੇ ਜਬ ਭੀ ਮੇਰੇ ਦਰਵਾਜ਼ੇ ਪਰ
ਦਸਤਕ ਹੋਤੀ ਹੈ ਯਾ ਮੇਰੀ 'ਮੈਂ' ਮੇਰੇ ਕਦਮੋਂ ਪਰ
ਸਰ ਝੁਕਾ ਕੇ ਰੋਤੀ ਹੈ
ਤੋ ਮੇਰਾ ਵਹਮ ਹਕੀਕਤ ਮੇਂ
ਉਭਰ ਆਤਾ ਹੈ ਓਰ
ਮੇਰੀ ਮੈਂ ਕਾ ਹਿਸਸਾ
ਡਰ ਸਾ ਜਾਤਾ ਹੈ, ਵਹੀ ਚੇਹਰਾ
ਮੇਰੇ ਚੇਹਰੇ ਪਰ ਉਭਰ ਆਤਾ ਹੈ॥

ਸੇਵਾਨਿਵ੍ਰੱਤ ਮੁਖ਼ਯ ਪ੍ਰਬੰਧਕ, ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ

करतारपुर साहिब: एक अद्वितीय यात्रा

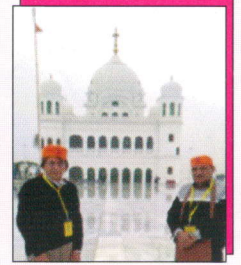
योगाभ्यास करने के पश्चात् कुछ देर पार्क में टहलना और सभी से सुबह की नमस्ते करना तथा हाल चाल पूछने के पश्चात् उन लोगों की संगत करना जो वृद्ध हैं, उनसे केवल उनकी मन की बात सुनना, मेरी एक आदत बन गई है।

10 नवंबर 2019 को योगाभ्यास के पश्चात् पार्क के चक्कर लगाए, लोगों से मिला फिर नित्यप्रति की तरह उन्हीं वरिष्ठ नागरिकों के ग्रुप में आकर बैठ गया और उनकी बातें सुनने लगा। आज का विषय कुछ ज्यादा ही गंभीर था। इससे पहले की मैं उनकी गंभीरता पर प्रश्न चिन्ह लगाता मुझे समझ आ गया कि वे सभी एक दिन पहले करतारपुर साहिब कोरिडोर के खोले जाने पर चर्चा कर रहे हैं। बातों-बातों में दोनों देशों की सरकारों का धन्यवाद करते हुए खुशी का इजहार कर रहे थे। मैंने उनकी आंखों में एक अजीब सी चमक देखी जो यह बता रही थी कि सिख संगत की यह अरदास “ऐसे गुरुद्वारा तथा गुरुधाम जिन्हें सिख पंथ से बिछोड़ दिया गया है उनके खुले दर्शन दीदार तथा सेवा संभाल का दान खालसा पंथ को बक्शो” स्वीकार हो गई है। उनकी आंखों की चमक बयां कर रही थी कि अरदास तो कबूल हो गई पर दर्शन कैसे होंगे। यह प्रश्न चिन्ह मैंने उनके चेहरे पर भांप लिया था। मैंने घर आकर अपने छोटे भाई को सारी बात बताई तो वह मुस्करा दिया और बोला “वीर जी अस्सीं करांगे इह सेवा, नाले पुन ते नाले फलियां” हम इन सभी को करतारपुर साहिब के दर्शन करवाएंगे।

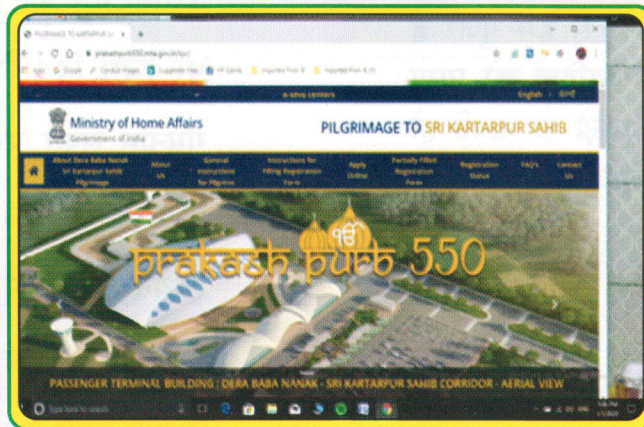
अगले दिन जब मैंने उन बुजुर्गों को करतारपुर साहिब की यात्रा का प्रस्ताव रखा तो सभी की एक आवाज में हां थी। मैंने यात्रा का केवल प्रस्ताव ही रखा था उन बुजुर्गों के मुख से आशीर्वादों की झड़ी लग गई जिनकों शब्दों में बयां करूंगा तो उन आशीर्वादों का महत्व छोटा पड़ जाएगा। फिर प्रारंभ हुई करतारपुर साहिब की यात्रा की तैयारी। हमने 21 लोगों का ग्रुप बनाया। सरकारी औपचारिकताओं को पूरा करने का जिम्मा छोटे भाई कुलदीप सिंह को दे दिया तथा आने-जाने, रहने, खान पान की व्यवस्था का जिम्मा मेरा था। यात्रा से पहले सबने मिलकर यात्रा की सफलता तथा कुशलता के लिए वाहेगुरु से अरदास की।

कुलदीप ने सबसे पहले प्रत्येक तीर्थयात्री के लिए पोर्टल

www.prakashpurb550.mha.gov.in पर ऑनलाइन पंजीकरण करवाया और जिस दिन यात्रा करनी है उस तारीख का उल्लेख किया क्योंकि यात्री केवल उसी तारीख को ही यात्रा कर सकते हैं जिस तारीख का उल्लेख उस पंजीकरण में किया होता है। पंजीकरण करते समय यात्री के पासपोर्ट की प्रति, पासपोर्ट आकार की फोटो, आधार कार्ड नं., पैन कार्ड नं., मोबाइल नं. ई-मेल का पता तथा ब्लड ग्रुप की जानकारी भी मांगी गई जोकि कुलदीप ने पहले ही सबसे प्राप्त कर ली थी। पंजीकरण करते ही पंजीकरण की सूचना तथा आई.डी. नं. सबके मोबाइल पर आ गया जिसकी जरूरत ई.टी.ए. डाउनलोड करते समय हमें फिर से पड़ने वाली थी।



जोगिन्द्र सिंह खुराना



स्थानीय पुलिस द्वारा जांच पड़ताल के पश्चात् तीर्थयात्रियों को यात्रा की तारीख से चार दिन पहले पंजीकरण की पुष्टि के संबंध में एस.एम.एस प्रत्येक आवेदक के मोबाइल पर प्राप्त हो गया। हमने प्रत्येक यात्री का आई.डी. www.prakashpurb550.mha.gov.in पोर्टल में डालकर उनका ईटीए (ETA) डाउनलोड कर उसकी कलर प्रिंट अपने पास रख लिए।

दिल्ली से अमृतसर रेल से जाने की टिकटें समय रहते ही बुक करवा दी गई थी। अमृतसर से आगे करतारपुर की यात्रा के लिए बस की व्यवस्था भी कर ली गई थी। रहने के लिए होटल आदि भी हमने दिल्ली से ऑनलाइन बुक करवा लिया था। करतारपुर साहिब की यात्रा से एक दिन पहले ही हम अमृतसर पहुँच गए थे। उस दिन हमने सभी साथियों को दरबार साहिब (स्वर्ण मंदिर) के दर्शन करवाए। दर्शन के दौरान कुछ तो इसे जन्नत कहते-कहते भावुक हो गए थे। शायद उन्होंने अपने जीवन में पहली बार यह दृश्य देखा था। उसी दिन अन्य तीर्थ स्थलों के दर्शन किए तथा बाघा बार्डर भी लेकर गए जिसे देख वे बहुत खुश हुए। बाघा बार्डर पर तो वरिष्ठ नागरिक होने के कारण उन्हें सबसे पहली पंक्ति में बैठने का अवसर प्राप्त हुआ।

अगले दिन प्रातः 7 बजे हमने बस से करतारपुर साहिब यात्रा प्रारंभ की। हम लगभग डेढ़ घंटे में गुरुद्वारा डेरा बाबा नानक पहुंच गए, जहां हमने जलपान किया और करतारपुर कोरिडोर की तरफ चल दिए। डेरा बाबा नानक करतारपुर कोरिडोर के रास्ते ही करतारपुर साहिब जा सकते हैं।

डेरा बाबा नानक करतारपुर कोरिडोर में अत्याधुनिक भारतीय यात्री टर्मिनल भवन का निर्माण 15 एकड़ में किया गया है। यात्री टर्मिनल भवन में पहुंचने पर तीर्थयात्रियों को अपने पासपोर्ट के साथ ईटीए दिखाना अति-आवश्यक होता है। डिपार्चर प्रक्रिया पूरी होने के बाद पोलियो ड्रॉप भी दिए गए जोकि हर यात्री के लिए अनिवार्य हैं। यात्रा के दौरान ई.टी.ए. अपने पास सुरक्षित रखना होता है तथा यात्रा से लौटने के पश्चात इसी कार्यालय में लौटाना होता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पासपोर्ट पर किसी प्रकार की कोई स्टैम्प नहीं लगती। डिपार्चर एवं अराईवल की मुहर केवल ई.टी.ए. पर ही लगाई जाती है।



समझौते के अनुसार, भारतीय मूल के सभी धर्मों के श्रद्धालु गलियारे (कोरिडोर) का उपयोग कर सकते हैं। यह यात्रा वीजा मुक्त होती है। तीर्थयात्रियों को केवल एक वैध पासपोर्ट ले जाने की आवश्यकता है। भारतीय मूल के व्यक्तियों को अपने देश के पासपोर्ट के साथ ओ.सी.आई. कार्ड (ओवरसीज सिटिजन ऑफ इंडिया कार्ड) ले जाने की आवश्यकता है, गलियारा सुबह से शाम तक खुला रहता है।

18 साल से कम उम्र के बच्चे तथा 75 वर्ष से अधिक आयु वाले बुजुर्ग केवल ग्रुप में ही यात्रा कर सकते हैं। भारतीय रिजर्व बैंक नियमों के अनुसार प्रत्येक यात्री केवल 11000 रुपये अपने साथ ले जा सकता है। प्रत्येक यात्री को केवल एक कपड़े का बैग जिसमें केवल 7 किलोग्राम का वजन स्वीकार्य था। ई.टी.ए. केवल यात्री को करतार पुर साहिब की यात्रा की अनुमति देता है इसके अलावा आप कहीं नहीं जा सकते।

हमने भारतीय इमिग्रेशन कार्यालय से लेकर पाकिस्तान बार्डर तक भारतीय वाहन सुविधा का उपयोग किया तथा इसी प्रकार पाकिस्तान

बार्डर से पाकिस्तान इमिग्रेशन कार्यालय तथा उससे आगे दरबार साहिब, करतारपुर साहिब तक की यात्रा पाकिस्तान द्वारा उपलब्ध वाहन का प्रयोग किया।

पाकिस्तान के इमिग्रेशन भवन पर प्रवेश करने से पहले प्रत्येक यात्री ने 20 यू.एस.डॉलर नैशनल बैंक ऑफ पाकिस्तान के काउंटर पर अदा किए। प्राप्त रसीद को यात्रा के दौरान संभाल कर रखा गया। भारतीय करेंसी को यू.एस.डॉलर में बदलवाने की व्यवस्था भी काउंटर पर उपलब्ध थी। ई.टी.ए. का पाकिस्तानी कार्यालय से कोई लेना-देना नहीं

है यह केवल भारतीय इमिग्रेशन के लिए है। पाकिस्तानी इमिग्रेशन कार्यालय में केवल पासपोर्ट तथा 20 यू.एस.डॉलर की रसीद दिखानी होती है जिसको दिखाने के पश्चात आपके गले में पीले रंग का एक करतारपुर साहिब यात्री पहचान कार्ड पहना दिया जाता है जिसे करतारपुर साहिब दर्शनों के दौरान पहने रखना होता है। यात्रा के पश्चात 20 यू.एस.डॉलर की रसीद तथा करतारपुर साहिब यात्री पहचान कार्ड

पाकिस्तानी इमिग्रेशन टर्मिनल में वापिस लौटाने होते हैं।

करतारपुर साहिब गुरुद्वारा जिसे मूल रूप से गुरुद्वारा दरबार साहिब के नाम से जाना जाता है, सिखों का एक प्रमुख धार्मिक स्थल है, जहां गुरु नानक देव ने अपने जीवन के अंतिम वर्ष बिताए। इस स्थान पर गुरु नानक जी ने लगभग 18 सालों तक अपना जीवन व्यतीत किया। यह गुरुद्वारा पाकिस्तान के नारोवाल जिले में बसा करतारपुर पाकिस्तान स्थित पंजाब में आता है। यह जगह लाहौर से 120 किलोमीटर दूर है जहां पर आज गुरुद्वारा साहिब स्थित है वहीं पर 22 सितंबर 1539 को गुरुनानक देव जी ने आखिरी सांस ली। यह गुरुद्वारा रावी नदी के करीब स्थित है और यह गुरुद्वारा भारत-पाकिस्तान सीमा से सिर्फ तीन किलोमीटर दूर है। दरबार साहिब में प्रवेश करते ही फ्री गाईड सेवा उपलब्ध है। दरबार साहिब (करतारपुर साहिब) के दर्शन करते ही तीर्थयात्री भावुक हो जाते हैं तथा खुशी के आँसू छलकने लगते हैं। यह गुरुद्वारा लगभग 40 एकड़ भूमि पर बना हुआ है।



पाकिस्तान बॉर्डर पर सुरक्षा जांच एवं इमिग्रेशन कार्यालय की ओर प्रस्थान

ऐसा मानना है कि जब नानक जी ने अपनी आखिरी सांस ली तो उनका शरीर लोप हो गया और जब चादर को हटा कर देखा तो उस जगह कुछ फूल रह गए थे। इन फूलों में से आधे फूल सिखों ने अपने पास रखे और उन्होंने हिंदू रीति रिवाजों से गुरु नानक जी का अंतिम संस्कार किया। वहीं, आधे फूलों को पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के मुस्लिम भक्त अपने साथ ले गए और उन्होंने गुरुद्वारा दरबार साहिब के बाहर आंगन में मुस्लिम रीति रिवाज के मुताबिक मजार बनाई जिसे अब मजार साहिब कहा जाता है।

गुरुद्वारा दरबार साहिब करतारपुर कुदरत का बनाया अद्भुत स्थान है। गुरुद्वारे के अंदर एक कुआं है। माना जाता है कि ये कुआं गुरुनानक देव जी के समय से है और इसी कुएं से जल लेकर वे अपने खेतों को सींचा करते थे। वर्तमान में दरबार साहिब में बनाए गए सरोवर के साथ इसे जोड़ दिया गया है जहां श्रद्धालु स्नान करते हैं तथा जल को अमृत के रूप में ग्रहण करते हैं।

करतारपुर साहिब में यात्रियों के लिए लंगर (भोजन) तथा जलपान की पर्याप्त व्यवस्था है। लंगर की सेवा पाकिस्तानी स्थानीय निवासी बड़ी

श्रद्धा के साथ निभाते हैं। आधुनिक तकनीक वाले शौचालय, रहने के कमरे, साफ-सफाई सब कुछ तारीफ-ए-काबिल है। करतारपुर साहिब में दर्शनों के लिए आए स्थानीय निवासी बहुत ही सरल एवं सहज स्वभाव के लगे। उन्होंने हमारा बहुत आदर सत्कार किया। हमारे साथ कुछ समय बिताया तथा तस्वीरें (फोटो) उतारीं। गुरुद्वारे की चार दिवारी के साथ एक मिनी मार्किट है जहाँ से आप अपने तथा अपनों के लिए खरीदारी कर सकते हैं।

चूंकि इस गुरुद्वारे से प्रत्येक यात्री को उसी दिन लौटना अनिवार्य होता है इसलिए हम लगभग 4 बजे उस गुरुद्वारे में पुनः माथा टेक कर पुनः दर्शनों की अभिलाषा की अरदास करते हुए वापस पाकिस्तानी इमिग्रेशन कार्यालय की ओर रवाना हुए। इस तीर्थ स्थान के दर्शनों के लिए भारतीय मूल के किसी भी मजहब के यात्री आ सकते हैं बशर्ते वे सभी कानूनी दस्तावेज रखते हों। इस तीर्थस्थान के दर्शन से चूके नहीं। तुरंत निर्णय लें और यात्रा प्रारंभ करें, अपने साथ किसी बुजुर्ग को अवश्य लेकर जाएं वो बहुत दुआएं देगा, जिसका आपको अंदाजा भी नहीं होगा।

सेवानिवृत्त प्रबंधक

रचनाकारों से निवेदन

बैंक के राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिका “राजभाषा अंकुर” में प्रकाशन हेतु रचना भेजते समय कृपया रचना के अंत में अपना नाम, शाखा/कार्यालय का पूरा पता, मोबाइल नंबर, पेन नं. तथा अपने बैंक का खाता संख्या (14 अंकों का) भी अवश्य लिखें।

मुख्य संपादक

ग्राहक के मुख से.....

महोदय,

वर्तमान युग में बिना बैंकिंग के जीवन की कल्पना तक संभव नहीं है। बैंकिंग हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुकी है। वैसे तो बैंकिंग बहुत पुराने समय से ही हमारे जीवन में दस्तक दे चुकी थी किन्तु इस समय में बैंकिंग क्षेत्र में कई नए आयाम स्थापित हो चुके हैं। बैंकिंग क्षेत्र में तकनीकी का प्रयोग इतना बढ़ चुका है कि लोगों को बैंकों में जाने की जरूरत ही नहीं है। एक वक्त था जब बैंक भी गिने-चुने थे और ग्राहक भी सीमित उस दौर में लोग बैंक से भावनात्मक रूप से अपना जुड़ाव महसूस करते थे। कुछ ऐसा ही मेरे पिता जी श्री सुरेंद्र सिंह माहेश्वरी जी के साथ हुआ। उन्होंने 1982 में पंजाब एण्ड सिंध बैंक रामा मंडी की शाखा में अपना खाता खुलवाया। खाता ऐसा खुला कि बैंक में आने जाने के साथ-साथ बैंक के तत्कालीन स्टाफ के साथ रिश्ते भी गहराते चले गए। सभी स्टाफ सदस्यों ने भी बड़ा ही प्यार और सम्मान दिया। समय के साथ-साथ हमारा बिजनेस भी बढ़ने लगा व बैंक के साथ विश्वास भी।

पिताजी के उस दौर का बैंक से संबंध, मेरे बिजनेस संभालने के साथ-साथ और भी गहराता चला गया। जब मैंने अमित माहेश्वरी (गोल्डी) बैंक आना जाना शुरू किया तब तत्कालीन शाखा प्रबन्धक श्री राजीव कुमार बंसल थे, जोकि वर्तमान में फरीदकोट जोनल ऑफिस के जोनल मैनेजर हैं। उनके दौर में शाखा ने नए आयाम स्थापित किए। जिस प्रकार शाखा नए आयाम स्थापित कर रही थी वैसे ही हमारा व्यवसाय भी बढ़ रहा था। मैंने अपने जीवन की पहली गाड़ी (हुंडई वर्ना) पंजाब एण्ड सिंध बैंक से कार लोन लेकर ली थी। आज हमारी तीन व्यावसायिक फर्म हैं :-

1. आत्माराम सुरेंद्रनाथ
2. आत्माराम राजीव कुमार
3. वर्धमान कॉटन फैक्ट्री

तीनों ही फर्म आज भी पंजाब एण्ड सिंध बैंक रामा मंडी शाखा से जुड़ी हुई हैं। बाकी दूसरे बैंकों की अपेक्षा पंजाब एण्ड सिंध बैंक के साथ हमारा संबंध आज भी उतना ही गहरा है जितना पिताजी के समय में था। वर्तमान समय में श्री परमजीत सिंह जी जो इस शाखा में वरिष्ठ प्रबन्धक हैं बहुत ही सुलझे हुए व्यक्ति हैं। वर्तमान आंचलिक प्रबन्धक श्री सतबीर सिंह जी से भी मेरी मुलाकात हुई है। वो बहुत ही प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी इंसान हैं। उनके मार्गदर्शन में शाखा का बिजनेस नए आयाम स्थापित कर रहा है।

अभी कुछ दिन पहले ही मेरे मन में आया कि एक नई गाड़ी लूँ। जिसको लेकर कई बैंक कई तरह के ऑफर भी दे रहे थे लेकिन पंजाब एण्ड सिंध बैंक की शाखा में प्रवेश करते ही दिल में आया कि गाड़ी लूँगा तो अपने बैंक से। बस फिर क्या था शाखा प्रबन्धक महोदय को कहने की देर थी उन्होंने दो से तीन दिन के अंदर गाड़ी (एम जी हेक्टर) की सेंक्शन दे देने की बात कही और जैसा कि हमेशा होता आया है आंचलिक प्रबन्धक महोदय ने भी तय वक्त पर सेंक्शन भिजवा कर अपनी व अपने बैंक की “जहां सेवा ही जीवन ध्येय है” पंक्तियों को चरितार्थ कर दिखाया।

अमित माहेश्वरी (गोल्डी)

लाल बहादुर शास्त्री: शुचिता, सादगी और साहस का पर्याय

सैकड़ों वर्षों की दासता से मुक्ति पाने के बाद जब भारत अपने पैरों पर खड़े होने का प्रयास कर ही रहा था कि चीन के साथ सीमा विवाद के कारण सन् 1962 में एक युद्ध में उलझना पड़ा। विदित है कि इसमें भारत की हार हुई और भारत को जान-माल की भारी हानि हुई। अगले कुछ वर्षों में भारत ने अपने महान प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू को भी खो दिया। देश की स्थिति सच में डंडाडोल होने लगी थी। ऐसी परिस्थितियों के बीच देश की बागडोर एक ऐसे नेता के हाथों में जाती है जो देखने में तो अति साधारण प्रतीत होते थे, परंतु जिनकी बुद्धि और विवेक असाधारण थे। चेहरे से सौम्य दिखने वाले इस व्यक्ति के निर्णय शिला के समान सख्त थे। हम बात कर रहे हैं देश के दूसरे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी की। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भारत को उसके लोगों के द्वारा ही शासित करने की परंपरा की नींव रखी गई। लोकतांत्रिक तरीके से गणतंत्र भारत के भविष्य को मजबूत करने में अनेक हस्तियों का अतुलनीय योगदान रहा है, लाल बहादुर शास्त्री जी का नाम उनमें प्रमुखता से लिया जाता है। शास्त्रीजी ने अपने सार्वजनिक जीवन में शुचिता, सादगी और साहस को इस कदर अपनाया कि भारतीय राजनीति में वे सार्वजनिक जीवन जीने की मिसाल बन गए। आज के दौर में राजनीति समेत जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नैतिकता, ईमानदारी, कर्तव्य-परायणता का क्षरण चिंतनीय स्तर पर हो रहा है। इस तरह के दौर में लाल बहादुर शास्त्री जी के जीवन परिचय से प्रत्येक व्यक्ति खासकर बच्चों को अवश्य अवगत कराना चाहिए।

आरंभिक जीवन

श्री लाल बहादुर शास्त्री जी का जन्म 02 अक्तूबर 1904 को उत्तर प्रदेश के मुगलसराय (अब जिसे दीनदयाल उपाध्याय के नाम से जाना जाता है) में हुआ। इनका वास्तविक नाम लाल बहादुर श्रीवास्तव था। इनके पिता श्री शारदा प्रसाद श्रीवास्तव आरंभ में एक सरकारी शिक्षक थे बाद में राजस्व विभाग में कार्यरत हुए। कम उम्र में ही सर

से पिता का साया उठ जाने के कारण शास्त्रीजी की माता श्रीमती रामदुलारी जी ने अथक परिश्रम से उनका पालन-पोषण किया। लाल बहादुर जी घर में सबसे छोटे थे, इसीलिए घर में उन्हें प्यार से 'नन्हें' कहा जाता था। शास्त्री जी की आरंभिक शिक्षा ननिहाल में हुई और आगे चलकर वाराणसी में उच्च शिक्षा प्राप्त की। स्कूल के दिनों से ही

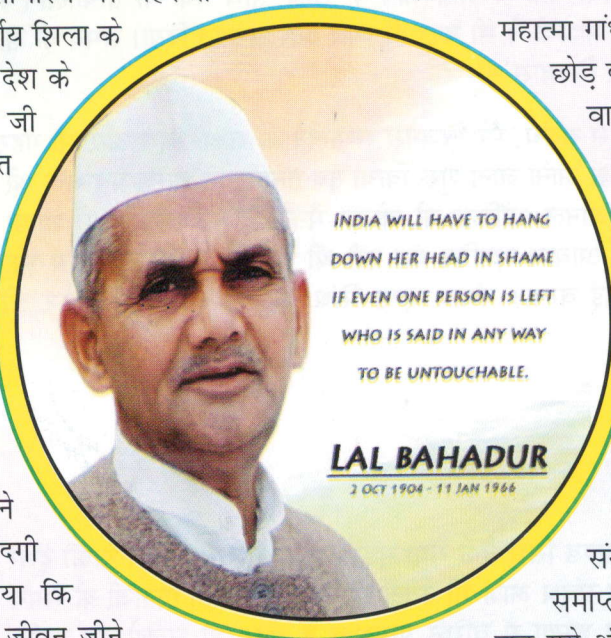


कौशलेन्द्र कुमार

शास्त्री जी स्वाभिमान और राष्ट्र-चेतना की भावना से युक्त थे। महात्मा गांधी के आह्वान पर उन्होंने बीच में ही पढ़ाई छोड़ दी और ब्रिटिश शासन के विरोध में स्थापित वाराणसी के काशी विद्या पीठ में दाखिला लिया। यहां से उन्होंने 'शास्त्री' की उपाधि प्राप्त की और फिर यही 'शास्त्री' उनके नाम के साथ हमेशा-हमेशा के लिए जुड़ गया। सन् 1928 में उनका विवाह मिर्जापुर निवासी गणेशप्रसाद की पुत्री ललिता जी से हुआ।

राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय भूमिका

संस्कृत भाषा में स्नातक स्तर तक की शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् वे भारत सेवक संघ से जुड़ गये और देशसेवा का व्रत लेते हुए यहीं से अपने राजनैतिक जीवन की शुरुआत की। शास्त्रीजी सच्चे गान्धीवादी थे जिन्होंने अपना सारा जीवन सादगी से बिताया और उसे गरीबों की सेवा में लगाया। भारतीय स्वाधीनता संग्राम के सभी महत्वपूर्ण कार्यक्रमों व आन्दोलनों में उनकी सक्रिय भागीदारी रही और उसके परिणामस्वरूप उन्हें कई बार जेल में भी रहना पड़ा। स्वाधीनता संग्राम के जिन आन्दोलनों में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही उनमें 1921 का असहयोग आंदोलन, 1930 का दांडी मार्च तथा 1942 का भारत छोड़ो आन्दोलन उल्लेखनीय हैं। सत्रह वर्ष की आयु में, असहयोग आंदोलन में भाग लेने के कारण वह पहली बार जेल गए। गांधी जी ने जब असहयोग आंदोलन में शामिल होने के लिए सभी देशवासियों से आह्वान किया था, उस समय लाल बहादुर शास्त्री की आयु केवल सोलह वर्ष थी। अनेक भारतवासियों समेत महात्मा



गांधी के इस आह्वान का असर शास्त्रीजी पर भी पड़ा और उन्होंने अपनी पढ़ाई छोड़ देने का निर्णय कर लिया। उनके परिवार ने उनके इस निर्णय को गलत बताते हुए उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की लेकिन वे इसमें असफल रहे। छोटे से दिखने वाले लाल बहादुर ने एक बड़े निर्णय के लिए अपना मन बना लिया था। उनके सभी करीबी लोगों को यह पता था कि एक बार मन बना लेने के बाद वे अपना निर्णय कभी नहीं बदलेंगे क्योंकि बाहर से विनम्र दिखने वाले लाल बहादुर अन्दर से चट्टान की तरह दृढ़ थे। गांधीजी के सन 1930 के ऐतिहासिक दांडी मार्च ने पूरे देश का ही माहौल बदल दिया था। अंग्रेजी हुकूमत की मुखालफत करने के लिए लोग गांधीजी के बताए रास्ते पर चल पड़े थे और इनमें से एक लाल बहादुर शास्त्री जी भी थे। इन्होंने कई धरना-प्रदर्शन-जुलूस का सफल नेतृत्व किया। परंतु इससे वे जल्द ही ब्रिटिश शासन की आखों में खटकने लगे और फिर शास्त्रीजी को ब्रिटिश सरकार ने सात साल जेल में रखा। लेकिन यहीं से लाल बहादुर शास्त्री जी एक मजबूत नेता बनकर उभरे। द्वितीय विश्व युद्ध का समय चल रहा था। गांधीजी ने “करो या मरो” का नारा देकर अंग्रेजों को भारत छोड़ने की अंतिम चेतावनी जारी कर दी थी। नेताजी सुभासचंद्र बोस ने आजाद हिंद फौज का गठन कर भारत को आजाद करने का बीड़ा उठा लिया था। देश अंतिम, किंतु निर्णायक संग्राम के लिए कमर कस चुका था। लाल बहादुर शास्त्री जी भी इस संग्राम में अपनी भूमिका दर्ज करा रहे थे। महात्मा गांधी के “करो या मरो” के नारे को शास्त्री जी ने इलाहाबाद में मरो नहीं मारो के रूप में तब्दील कर दिया जो कि जनाकांक्षाओं के अनुरूप ही था। इसके बाद वो जल्द ही अंग्रेजी हुकूमत के हाथों गिरफ्तार कर लिए गए। देश को स्वतंत्रता मिलने के बाद राज्य व केंद्र सरकार में उनकी भूमिका बेहद महत्वपूर्ण रही।

सादगीपूर्ण जीवन की मिसाल पेश करने वाले व्यक्ति

‘सादा जीवन-उच्च विचार’ वाली लोकोक्ति को जिन महापुरुषों ने चरितार्थ किया है, उनमें से एक शास्त्रीजी भी हैं। उनके जेल के दिनों की एक घटना है। उन दिनों स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने के कारण

जेल जाने वाले स्वतंत्रता सेनानियों के घरों में कुछ संगठनों के द्वारा पेंशन प्रदान की जाती थी। एक बार शास्त्रीजी ने खत लिखकर ललिता जी से पूछा कि पेंशन के रुपये समय से मिल रहे हैं न! उन्होंने जवाब में लिखा कि पचास रुपये समय ले मिल जाते हैं जिसमें से चालीस ही खर्च होते हैं और दस बच जाते हैं। इस पर शास्त्रीजी ने उस संगठन से अनुरोध किया कि भविष्य में उनके परिवार को सिर्फ चालीस रुपये ही भेजे जाएं क्योंकि परिवार के लिए इतना ही पर्याप्त है और बचे हुए दस रुपये राष्ट्र-हित में खर्च किए जाएं। आज जब हम भाई-भतीजावाद और पैसों के पीछे दीन-ईमान सब कुछ छोड़ चले हैं, शास्त्रीजी के ये विचार अमा-निशा के मध्य जलती मशाल के समान हैं। प्रधानमंत्री रहने के दौरान भी शास्त्रीजी के पास अपनी कोई कार नहीं थी और इसकी एक वजह उनके पास पर्याप्त धन का नहीं होना था। परिवार के कहने पर शास्त्रीजी ने कार खरीदने के लिए बैंक से लोन की अर्जी दी जिसे बैंक ने झटपट



स्वीकार कर लोन दे दिया। इस पर शास्त्रीजी ने बैंक को नसीहत दी कि आम आदमी को भी इसी तत्परता से लोन मिलना चाहिए। यहां दो बातें गौरतलब हैं। पहली यह कि भारत जैसे बड़े देश का प्रधानमंत्री, जो देश की जनता के लिए अपनी कलम से करोड़ों रुपये के बजट पास करता है, खुद के पास इतने पैसे भी नहीं रखता कि एक कार ले सके। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह कि निजी जीवन में प्राप्त सुविधाओं को सीधे जनता तक पहुँचाने की तत्परता दिखती है।

आज जब हमारा देश स्कैम-घोटाले-धोखाधड़ी की घटनाओं से परेशान हो चुका है, शास्त्रीजी का जीवन एक आदर्श बन हमारे देश को शुचिता व ईमानदारी की राह दिखलाता है।

नैतिकता का आदर्श स्थापित करने वाले राजनेता

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात शास्त्रीजी को उत्तर प्रदेश के संसदीय सचिव के रूप में नियुक्त किया गया था। गोविंद बल्लभ पंत के मन्त्रिमण्डल में उन्हें पुलिस एवं परिवहन मन्त्रालय सौंपा गया। परिवहन मन्त्री के कार्यकाल में उन्होंने प्रथम बार महिला संवाहकों (कंडक्टरों)की भर्ती की थी। पुलिस मन्त्री होने के बाद उन्होंने भीड़ को नियन्त्रण में रखने के लिये लाठी की जगह पानी की बौछार का

प्रयोग प्रारम्भ कराया। 1951 में, जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में वह अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव नियुक्त किये गये। उन्होंने 1952, 1957 व 1962 के चुनावों में कांग्रेस पार्टी को भारी बहुमत से जिताने के लिये बहुत परिश्रम किया। पं.नेहरू के मंत्रीमंडल में रेल मंत्री के रूप में शास्त्रीजी ने कार्यभार संभाला। उनके कार्यकाल में ही एक रेल दुर्घटना ने कई लोगों की जान ले ली। शास्त्रीजी ने इसे अपनी नैतिक जिम्मेदारी मानते हुए रेल मंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया। देश भर में लोगों ने उनके इस कदम को सराहा तथा संसद में बोलते हुए पं.नेहरूजी ने भी इसे संवैधानिक मर्यादा की मिसाल बताया। यद्यपि इस दुःखद रेल दुर्घटना में शास्त्रीजी की कोई भूमिका नहीं थी, तथापि रेल मंत्री के पद से इस्तीफा देकर उन्होंने आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए उच्च नैतिक आदर्श स्थापित किए।

साहसी एवं स्वाभिमानी प्रधानमंत्री की छवि

जैसाकि हम जानते हैं शास्त्रीजी जब देश की कमान संभालते हैं तो देश की स्थिति कुछ ठीक नहीं थी। पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान इसका फायदा उठाने की सोच भारत पर आक्रमण कर देता है। उसकी मंशा कश्मीर को हथियाने की थी इसलिए उसने कश्मीर के आस पास ही लड़ाई छेड़ी थी। कद के छोटे और साधारण से दिखने वाले शास्त्रीजी को विशाल कद काठी के मालिक अयुब खान ने हल्के में लिया था। पाकिस्तान ने यहीं गलती कर दी। शास्त्रीजी ने जबरदस्त कुटनीतिक व सामरिक कौशल का परिचय देते हुए युद्ध का क्षेत्र सिर्फ कश्मीर तक न सीमित रखकर हिंदुस्तान-पाकिस्तान की पूरी सीमा तक फैला दिया। अयुब खान हतप्रभ रह गया क्योंकि उसे शास्त्रीजी से ऐसे जवाब की बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी। पाकिस्तान इस युद्ध में भारत से बुरी तरह पिछड़ता चला जाता है और अंत में संघर्ष विराम के लिए राजी होता है। अमेरिकी लेखक स्टैलने वॉलपार्ट अपनी किताब 'इंडिया' में लिखते हैं कि जब संघर्ष विराम होता है तब भारतीय सेना पाकिस्तान के पंजाब की राजधानी को गंभीर नुकसान पहुंचाने की स्थिति में थी और कश्मीर के कई महत्वपूर्ण सामरिक स्थलों पर भी नियंत्रण पा चुकी थी। सन् 1965 की लड़ाई हमने शास्त्रीजी के विवेक, साहस और रणनीतिक कौशल के दम पर ही जीती थी।

लाल बहादुर शास्त्रीजी के प्रधानमंत्री काल का दौर वह दौर था जब देश अनाज के मामलों में आत्मनिर्भर नहीं था। जबरन थोपे गए युद्ध की विभीषिकाओं ने देश की अर्थ-व्यवस्था को झकझोर दिया था। भारत को अनाज की जरूरत थी परंतु अमरीका ने अपने पब्लिक

लॉ-480 कानून के तहत भारत को गोहूँ भेजने के लिए कई प्रकार की अघोषित शर्तें थोप दी। शास्त्रीजी ने इसे भारत के स्वाभिमान के खिलाफ मानते हुए कहा कि हम एक शाम भूखे रह लेंगे लेकिन अपने स्वाभिमान से समझौता नहीं करेंगे। उन्होंने देशवासियों से एक शाम भूखे रहने की अपील की और स्वयं भी पूरे परिवार के साथ एक शाम भूखे रहने लगे। पूरे देश भर में इसका अभूतपूर्व असर देखा गया और देखा जाता भी क्यों न! क्योंकि यह अपील एक ऐसे प्रधानमंत्री की ओर से की गई थी जो वास्तव में जनता के लिए ही जीता था।

जय जवान - जय किसान

शास्त्रीजी ने समझ लिया था कि देश को दुश्मनों की नापाक नजरों से और भूख की तड़प से बचाना है। उन्होंने इन दोनों समस्याओं से बचने के लिए जवानों व किसानों का आह्वान किया और देश को नारा दिया- “जय जवान- जय किसान”। इस ऐतिहासिक नारे में तात्कालिक भारत की दो सबसे बड़ी समस्याओं को सुलझाने की तीव्र उत्कंठा दिखती है। सामरिक दृष्टि से भारत को बार-बार चुनौतियां मिल रही थीं। आजाद हुए अभी ठीक से बीस वर्ष भी नहीं हुए थे और भारत को तीन-तीन युद्ध की विभीषिकाओं को झेलना पड़ा था। भारत की एक बड़ी, बहुत बड़ी आबादी भूखी रहने को अभिशप्त थी। इसीलिए शास्त्रीजी ने इन दोनों समस्याओं से पूरे राष्ट्र को एक होकर जूझने का आह्वान किया। भारत के भविष्य को सुरक्षित व पूर्ण पोषित करने का बीड़ा शास्त्रीजी ने उठा लिया था।

सन् 1965 के युद्ध के बाद पाकिस्तान के साथ शांति समझौता करने के लिए शास्त्री जी ताशकंद गए थे और भारत के हितों को ध्यान में रखते हुए ताशकंद समझौता किया। परंतु इसी ताशकंद में उन्होंने अंतिम सांसे भी ली। देश और देश की जनता को समर्पित यह प्रधानमंत्री 11 जनवरी 1966 को हमसे हमेशा हमेशा के लिए दूर हो गया। देश के शीर्ष पद पर शास्त्रीजी कम ही वक्त के लिए रहे, किंतु इस कम वक्त में ही उन्होंने न सिर्फ भारत के वर्तमान को खंडित होने से बचाया बल्कि भारत के भविष्य को भी भूख और भय से सुरक्षित रखने का युगांतकारी कार्य किया। भारतीय राजनीति का यह अमर लाल आज हमारे बीच नहीं है परंतु सार्वजनिक जीवन की जिन ऊँचे आदर्शों को, नैतिकता व शुचिता को इन्होंने स्थापित किया है वह भारतीय लोकतंत्र को भटकाव की स्थिति में सदा राह दिखलाते रहेंगे।

प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग

अर्थव्यवस्था में सुस्ती बड़ी मंदी का संकेत तो नहीं है ?

यू तो आर्थिक विकास की गति में थोड़ी सी भी रुग्णता आ जाए तभी कुछ अर्थशास्त्री सरकार की नाकामी साबित करने के लिए आर्थिक मंदी की घोषणा कर देते हैं लेकिन हमें वास्तविक रूप से देखना होगा कि देश की वर्तमान हालत क्या आर्थिक मंदी का संकेत तो नहीं कर रही है। इसके लिए हमें अर्थव्यवस्था के भिन्न-भिन्न मापदंडों में आ रहे उतार-चढ़ाव का विश्लेषण करने की आवश्यकता होती है।

बैंकों में बढ़ते एनपीए के कारण पिछले 12 से 15 तिमाही के दौरान ज्यादातर बैंकों की वित्तीय स्थिति ठीक नहीं रही है।

अधिकांश राष्ट्रीयकृत बैंक घाटे में रहे हैं। बढ़ते गैर निष्पादित आस्तियों (एनपीए) के कारण देश में बैंकिंग क्षेत्र और गैर बैंकिंग क्षेत्र (एनबीएफसी) में कार्य कर रहे संस्थाओं की स्थिति काफी खराब रही है। जिसके कारण देश में कार्यरत कुल सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में से लगभग आधे बैंकों को भारतीय रिजर्व बैंक ने कई तिमाहियों तक पीसीए के अंतर्गत रखा है। इसमें से ज्यादातर बैंक इससे बाहर आ चुके हैं।

पिछले चार-पाँच तिमाहियों के दौरान देश में औद्योगिक विकास हेतु माने जाने वाले कोर सेक्टर आटो मोबाइल सेक्टर अपने सबसे बुरे दौर से गुजर रहा है। इसकी विकास दर लगातार नकारात्मक ही दर्ज हो रही है। जुलाई-2019 में कार और बाइक की बिक्री में 31 फीसदी की गिरावट आई है। इसके चलते आटो मोबाइल सेक्टर से जुड़े साढ़े तीन लाख से ज्यादा कर्मचारियों की नौकरी चली गई। इतना ही नहीं करीब 10 लाख लोगों की नौकरियां खतरे में हैं। कुछ ऐसे ही कठिन दौर से कृषि के बाद सबसे ज्यादा लोगों को रोजगार देने वाले कपड़ा उद्योग (टेक्सटाइल सेक्टर) की भी हालत है। रोजगार के नए अवसर का सृजन नहीं हो पा रहा है तथा जिस क्षेत्र में रोजगार पहले से मौजूद है वहां छटनी हो रही है। ये सब संकेत प्रथम दृष्टया मंदी के संकेत दे रहे हैं। क्या भारत भी मंदी में जकड़ता जा रहा है?

आइए जानते हैं कि इससे पहले भारत पर मंदी की आंच कब-कब पड़ी है। उदारीकरण के बाद पिछले तीन दशकों में हम देश की

अर्थव्यवस्था का अवलोकन करेंगे तो पाते हैं कि 8-10 वर्षों के अंतराल पर अर्थव्यवस्था में एक सुस्ती का दौर आता है। सर्वप्रथम 1990-91, फिर 2001-02, फिर 2008-09, और अब 2019-20 में ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है कि देश की अर्थव्यवस्था मंदी के दौर में प्रवेश कर चुकी है। पिछली तिमाही (जुलाई-सितंबर 2019)

के जीडीपी के आंकड़े कुछ इसी ओर संकेत कर रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, एशियाई विकास बैंक, भारतीय रिजर्व बैंक आदि तमाम तरह के राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के आंकड़े को धता बताते हुए देश की विकास दर 4.5 प्रतिशत रही है। जो पिछले 26 तिमाही के अपने न्यूनतम स्तर पर पहुँच गई है। 2012-13 में ऐसा अवसर आया था जब देश का विकास दर इतना कम दर्ज किया गया था। गिरावट का यह दौर सिर्फ भारतीय अर्थव्यवस्था में नहीं देखा जा रहा बल्कि विश्व की लगभग सभी छोटी-बड़ी अर्थव्यवस्था गिरावट के दौर से गुजर रहे हैं।



पिछले दो वर्षों से आटो मोबाइल सेक्टर का हाल हमारे देश में खराब ही चल रहा है। इसके पीछे आर्थिक कारण से ज्यादा जिम्मेदार नीतिगत कारण है। वर्ष 2018 में भारत बीएस - IV के लागू करने की अनिवार्यता के कारण आटो मोबाइल सेक्टर में एक सुस्ती का दौर शुरू हुआ था। जो सततरूप से चल रहा है। आने वाले वर्षों में इसमें अपेक्षित सुधार की गुंजाइश कम ही लगती है। भारत, बीएस-IV के लागू होने के बाद गाड़ियों के दाम 15 प्रतिशत से 25 प्रतिशत तक बढ़ने के अनुमान हैं। प्रदूषण की बढ़ती समस्या के कारण इलेक्ट्रॉनिक वाहन को सरकार द्वारा बढ़ावा देने की नीति पर कार्य चल रहा है। इसके कारण भी आटो मोबाइल सेक्टर में एक संशय का वातावरण बना हुआ है।

विश्व का दूसरा सबसे बड़ा टेलिकॉम उपभोक्ता भारत है। तब भी कुछ तिमाहियों से यहाँ सेवा दे रहे टेलिकॉम प्रदाता कंपनियों की सेहत ठीक नहीं है। सबसे पहले सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी



विभाष कुमार

बीएसएनएल की हालत खस्ता हुई अब अन्य निजी क्षेत्र के कंपनियों का हालत खराब है। सरकार के समक्ष इन कंपनियों को लाइसेंस और स्पेक्ट्रम फीस में राहत देने की फरियाद पहुंची है।

वैश्विक स्तर पर मंदी के जो आसार हमें पिछले कुछ वर्षों से दिख रहे हैं इसके पीछे आर्थिक कारण कम और राजनीतिक कारण ज्यादा दिख रहे हैं। वर्ष 2008 ई. में अमेरिका में हुए वित्तीय सस्थाओं के दिवालियेपन के कारण उपजे हालत ने पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था को चरमरा दिया था। परंतु 2018-19 में वैश्विक स्तर पर ऐसे किसी भी वित्तीय सस्थाओं के दिवालीयपन की खबर नहीं आई है। जिसने विश्व अर्थव्यवस्था की कमर तोड़कर रख दी हो।

पिछले कुछ वर्षों में अमेरिका, चीन और यूरोप के कुछ देशों ने अपने यहाँ आर्थिक मॉडल को कुछ हद तक बदलने का काम किया है। इन देशों में एकाएक दक्षिणवादी विचार धारा प्रबल हो गई है। वैश्वीकरण का झण्डा मजबूत करने वाले इन देशों को अपने देश के राजनीतिक एवं आर्थिक हित साधने की चिंता एकदम से प्रबल हो गई है। इसके अंतर्गत विश्व अर्थव्यवस्था के अग्रणी देशों में से लगभग सभी देश अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, चीन ने संरक्षणवाद की नीति अपनाना शुरू कर दिया।

सर्वप्रथम ब्रिटेन ने यूरोपियन यूनियन से अपने आपको बाहर होने की घोषणा कर दी। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद बने इस क्षेत्रीय सहयोग संगठन में यूरोप के लगभग सभी बड़े देश शामिल रहे हैं। इन देशों के मध्य सांस्कृतिक, व्यापारिक, राजनीतिक, सामरिक सभी तरह के संगठन एक साथ कार्य कर रहे थे। यही तक नहीं, इन यूरोपियन देशों ने आपसी व्यापार हेतु एक मुद्रा 'यूरो' भी विकसित कर रखी है। विश्व अर्थव्यवस्था का एक चौथाई हिस्सा इन देशों से आता है इसलिए एक संगठन के रूप में यूरोपियन यूनियन का अपना विशेष महत्व रहा है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से इस संगठन ने नित्य नए बुलंदियों को छुआ था। आंतरिक कारणों से ब्रिटेन के इस संगठन से बाहर निकालने के कई मायने लगाए जा रहे हैं। जिनमें से एक कारण यह भी है कि दूसरे देश की अर्थव्यवस्था चौपट हो रही है तो उससे हम क्यों जूझें। सामूहिकता के सिद्धांत से चल रही इस संस्था में कुछ देशों का 'मैं' जग गया है। पहले हमारे देश के नागरिक को रोजगार के अवसर, आर्थिक लाभ मिले, दूसरे देश की ढहती अर्थव्यवस्था

को कंधा देने से अच्छा है कि अपने घर को संभाला जाए। इसी सिद्धांत को आगे बढ़ाते हुए ब्रिटेन ने यूरोपियन यूनियन से अपने आप को किनारे कर लिया है।

दूसरी मुख्य वजह अमेरिका के राष्ट्रपति चुनाव में जीत के बाद नई सरकार ने "नेशन फर्स्ट" का एक नारा दिया है। देश में गिरते उत्पाद एवं बढ़ते बेरोजगारी दर के कारण शायद यह इनकी मजबूरी भी रही हो, जिसके अंतर्गत निवर्तमान राष्ट्रपति ने पहले अमरीकन उसके बाद कोई और की नीति अपनाया हो। जिसके अंतर्गत खासकर व्यापार और रोजगार के अवसरों को सिर्फ अपने देश के नागरिकों हेतु आरक्षित कर दिया है। कई वस्तुओं के आयात पर मात्रात्मक प्रतिबंध आदि भी लगा दिया गया है। कई विश्लेषक कहने भी लगे हैं

कि वैश्विक अर्थव्यवस्था की सुस्ती अमेरिका चीन व्यापार युद्ध के कारण ज्यादा है। इन देशों के संरक्षणवादी नीति के कारण विश्व अर्थव्यवस्था की हालत खस्ता होने लगी है। दोनों देश अपने-अपने देश में उन देशों से आयातित माल/सेवाएँ नहीं आ सके इसलिए आयात शुल्कों में बेतहाशा वृद्धि कर दी है। चाइना ने अमेरिका से आयातित माल पर 5 प्रतिशत से लेकर 25 प्रतिशत तक का

शुल्क बढ़ा दिया है। अमेरिका ने भी अपने यहाँ कुछ ऐसे ही कदम उठाए हैं दोनों देशों के मध्य इस टैरिफ वार के कारण लगभग 500 बिलियन डालर का व्यापार प्रभावित हो रहा है। कमोबेश दोनों देशों में ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई है जैसे सत्तर-अस्सी के दशक में सोवियत संघ के साथ अमेरिका की थी। यह दौर उस शीतयुद्ध वाला दौर तो नहीं है परंतु दोनों देशों के बीच आर्थिक युद्ध ही चल रहा है।

तीसरा कारण फ्रांस में नई सरकार बनने के एक वर्ष के भीतर ही उनके द्वारा उठाए गए कदमों के कारण वहाँ की जनता में भारी असंतोष व्याप्त हो गया था। वर्ष 2018 की तीसरी तिमाही के दौरान फ्रांस में बढ़ती महंगाई (तेल के दाम में वृद्धि) एवं कर सुधारों, आदि ने मध्यम वर्ग के लोगो में असंतोष की लहर पैदा कर दी। इसके खिलाफ वहाँ के लोगो द्वारा ऑनलाइन कैपेन चलाया गया। जिसमें 10 लाख से अधिक लोगो ने इसका समर्थन देते हुए ऑनलाइन हस्ताक्षर कर अपना समर्थन इसके प्रति व्यक्त किया। इस कंपेन को "येल्लो जैकेट" अभियान का नाम दिया गया। इसके कारण वहाँ की निवर्तमान सरकार ने अपने लोगो के लिए संरक्षणवाद की नीति को अपनाया।



चौथा कारण आंतरिक कारण है। पिछले वर्षों में केंद्र सरकार द्वारा कई आर्थिक सुधार कार्यक्रम चलाए गए। जिसके अंतर्गत कई नए कानून पास किए गए। पूर्व से चलती आ रही व्यवस्था में परिवर्तन लाया गया है। कर सुधारों को लेकर जीएसटी आया है। ब्लैक मनी के रोकथाम को लेकर नोट बंदी और रियल स्टेट नियामक कानून बनाए गए। जिसके कारण न केवल समानांतर चल रही एक आर्थिक व्यवस्था को ध्वस्त किया गया बल्कि एक ढांचा विकसित करने की जिम्मेदारी सरकार के सामने आ गई थी। एक साथ इतने बदलाव को स्वीकार करने की स्थिति में हमारी अर्थव्यवस्था शायद नहीं रही है। हमारे देश की अर्थव्यवस्था में आ रही गिरावट के पीछे एक कारण यह भी हो सकता है।

देश की आर्थिक तंत्र की रीढ़ कहे जाने वाले बैंकिंग एवं गैर बैंकिंग वित्तीय संस्थाएं (एनबीएफसी) बढ़ते एनपीए के कारण आर्थिक संकट के दौर से गुजर रही हैं। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का क्रेडिट ग्रोथ 7-8 प्रतिशत से ऊपर नहीं बढ़ रहा है। इसके पीछे तर्क दिए जा रहे हैं। एक यह कि मांग कम है इसलिए और दूसरा तर्क यह है कि बैंकों के पास नए एक्सपोज के लिए पर्याप्त पूंजी नहीं है। भारत सरकार सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को मजबूत करने के लिए कुछ बैंकों का मर्जर और तरलता के संकट से उबारने हेतु इस वित्तीय वर्ष में 70 हजार करोड़ रुपये देने जा रहा है।

जिसके कारण सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की वित्तीय स्थिति सुधरेगी। वे देश के उद्योगपतियों/ व्यवसायियों को ऋण देने की स्थिति में होंगे। देश में वित्तीय क्षेत्र में काम कर रहे संस्थाओं की अभी के हालात देख ऐसा लग रहा कि देश के उद्योगपतियों के लिए सिर मुड़ाते ओले पड़ने वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। इस स्थिति में उन्हें अपनी वित्तीय आवश्यकता की पूर्ति हेतु विदेशी संस्थाओं से फंड लेना पड़ रहा है। चालू वर्ष के दौरान अपनी मांगों की पूर्ति हेतु इन कंपनियों द्वारा 30 बिलियन डॉलर से ज्यादा पूंजी विदेशी संस्थाओं से ली जा चुकी है।

जैसा हमें ज्ञात है कि हमारे देश की अर्थव्यवस्था खपत आधारित अर्थव्यवस्था है। इसलिए हम वैश्विक स्तर पर बढ़ रहे संरक्षणवाद

की नीति के कारण उपजे हालात को ही सिर्फ अर्थव्यवस्था के गिरावट के लिए जिम्मेदार मान ले तो हमारी भूल होगी। हमारे देश की अर्थव्यवस्था पर इसका भी प्रतिकूल असर अवश्य पड़ रहा है। आज हम भूमंडलीकृत विश्व में जीवन व्यतीत कर रहे हैं इसलिए वैश्विक हालात से दो-चार होना ही पड़ता है।

हमारे देश के बुनियादी आर्थिक हालात ठीक है। शेयर बाजार 41 हजार के पार पहुंच चुका है। विदेशी संस्थागत निवेशक भारत में लगातार निवेश कर रहे हैं। विदेशी मुद्रा भंडार 450 बिलियन डॉलर के आसपास लगातार बना हुआ है। डॉलर के मुकाबले रुपए का मूल्य स्थिर बना हुआ है। इसलिए निर्यात में हुई कमी के कारण भी भुगतान असंतुलन चिंता की स्थिति पर नहीं पहुंचा है।



मुद्रास्फीति नियंत्रण में रहने के बाद भी मांग का नहीं बढ़ना एक चिंता का कारण है। आर्थिक गिरावट को दूर करने के लिए हमें घरेलू मांग को बढ़ाने की जरूरत है। इसके लिए मध्यम वर्ग एवं ग्रामीण क्षेत्र के लोगो की आय में वृद्धि करने की आवश्यकता है। केंद्र सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्र के निवासी की आय बढ़ाने के लिए पिछले कुछ दिनों में प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (डीबीसी) के द्वारा कई योजनाओं को प्रारंभ किया है। खरीफ फसल की अच्छी बुआई और अगले वर्ष मानसून के सामान्य रहने के कारण ग्रामीण क्षेत्र के लोगो की क्रय शक्ति बढ़ने की संभावना है।

अर्थव्यवस्था में मुद्रा के परिचालन का एक चैन बनी होती है। अभी यह निवेश कैपिटल मार्केट (शेयर बाजार) और सोने में किया जा रहा है। इसलिए यह दोनों क्षेत्रों में सकारात्मक वृद्धि का रुझान है। वह दिन दूर नहीं जब निवेश का रुझान अर्थव्यवस्था के कोर सेक्टर की तरफ बढ़ेगा। लोगों की क्रय क्षमता बढ़ेगी और फिर से हमारे देश की अर्थव्यवस्था पूर्व की तरह 7-8 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि से फरफटे भरने लगेगी। अर्थव्यवस्था में सुस्ती का यह दौर आने वाली कुछ तिमाहियों में अवश्य छंट जाएगा। देश में यह दौर सिर्फ अर्थव्यवस्था में सुस्ती का दौर है कोई मंदी का नहीं।

स्टाफ प्रशिक्षण केन्द्र, रोहिणी

एक अधूरा-सा पता...

प्रदीप कुमार

हमेशा की तरह समंदर आज भी गरज रहा है... बेचैन! विशाल समंदर के अन्तःस्थल में समायी बेचैनी को छोटी-बड़ी लहरें उमड़-घुमड़ कर किनारों पर सिर पटक-पटककर अभिव्यक्त कर रही हैं। किनारा फिर भी अविचलित है, शांत है... साधना में लीन किसी साधक की तरह ध्यानमग्न... बाह्य-जगत से बेफिक्र, मौन।

मेरे अन्तःस्थल में भी कहीं एक बेचैन-सी याद टीस बनकर मुझे जाने-अनजाने परेशान करती है। “मैं खो जाता हूँ कहीं उन यादों के समंदर में समंदर की छोटी-बड़ी लहरें बहा ले जाती हैं मुझे दूर कहीं यादों के क्षितिज पर जहाँ से मैं स्पष्ट देख पाता हूँ”, रमा से मेरी मुलाकात का वह पहला दिन...

कैमिस्ट्री प्रैक्टिकल्स का क्लास खत्म होते ही रमा अपनी सहेलियों के साथ लैब के बाहर कॉरिडोर में खड़ी शायद किसी का इंतजार कर रही थी, ऐसा ही लगा था तब, लैब से निकलते हुए अचानक मेरी नजर उसकी आँखों पर पड़ी, उसकी आँखें मानो मुझे ही तलाश रही थीं, पल भर के लिए आँखें चार हुईं, परंतु इसे महज इत्तेफाक समझते हुए मैंने अपनी आँखें हटा ली और जल्दी से अपने कदम को आगे बढ़ा दिया, रमा से परे, मेरी धड़कने तेज थीं, सिर से पैर तक अजीब सी सिहरन महसूस कर पा रहा था, दिसंबर की उस ठण्ड में मैं पसीने से तर-बतर था, उस दिन लैब में हम दोनों का टेबल कॉमन था, हम दोनों आमने-सामने थे... दोनों के बीच टेस्ट-ट्यूब तथा अन्य संयंत्रों से भरा रैक था, प्रैक्टिकल्स के दौरान मैंने आज उससे नजरें बचा कर कई बार घूरा था, वह भी मुझे बीच-बीच में जिज्ञासा भरी निगाहों से ताक रही थी, महज गलतफहमी मान कर उसकी जिज्ञासा को मैंने नजर-अंदाज किया था, उसकी नजर मिलते ही मैंने अपनी नजरों को उससे अलग किया था, वह हमेशा की तरह आज भी बेहद खूबसूरत लग रही थी, लाल सलवार-कुर्ते के ऊपर डाले सफेद ऐप्रॉन में उसका सुर्ख चेहरा फब रहा था, खो गया था मैं उन हसीन पलों में कि अचानक पीछे से मेरे नाम के संबोधन से मैं ठिठक गया, अगले ही पल कदम बढ़ा कर रमा मेरे साथ-साथ कोरिडोर पर चल रही थी, मुझे अपनी आँखों पर यकीन तो नहीं हो रहा था पर यह रमा ही थी।

मुझे से नोट-बुक माँगा था उसने, वह मेरी ओर मुड़ते हुए मुझे एकटक देख रही थी, न जाने क्यों उससे मैं देर तक नजरें मिलाने में असमर्थ था, सूर्य की चमचमाती आभा में आँखें चौंधिया गई हों जैसे, नोट-बुक देते हुए अपने हाथों की कंपकंपी को मैंने स्पष्ट महसूस किया था। मुझे अपनी आँखों पर यकीन नहीं हो रहा था। पल भर को मैं ख्वाबों में खो गया था, हाँ, इतना तो याद है कि उस रात मुझे नींद नहीं आई थी।

रमा के साथ मेरा वह पहला परिचय था। यूँ तो हम एक साथ ही कॉलेज में पढ़ते थे। सेक्शन भी एक ही था, अगर कुछ अलग था तो

वह था दोनों के स्वभाव में... हम दोनों के स्वभाव में आकाश-पाताल का अंतर था। मैं गाँव के साधारण परिवार में पला-बढ़ा एक झोंपू स्वभाव का सीधा-सादा लड़का था तो वह अमीर बाप की एक मुंहफट और फैशनेबल लड़की। सुन्दर इतनी कि स्वर्ग की परियां भी तरसती, कॉलेज में उस पर सभी जान छिड़कते थे, पर वह थी कि किसी को घास तक भी नहीं डालती थी। किसी को भी अपने पास फटकने तक नहीं देती थी, इसलिए चाहकर भी मैंने उससे कभी बातचीत करने की कोशिश नहीं की थी, संभवतः उससे बातचीत करने की हिम्मत ही नहीं बटोर पाया था। शायद हमारी परस्पर-विरोधी स्वभाव ही इसका कारण रहा हो।

काँपी वापस करते समय उसने मुझसे बड़ी ही सहजता से बातचीत की थी मानो हम एक-दूसरे को बरसों से जानते हों। बातचीत के दौरान उसने बेबाक होकर मुझसे कहा था, “देखो, मुझे पढ़ाई-वढ़ाई थोड़े ही करनी है। मैं तो बस डिग्री हासिल करना चाहती हूँ ताकि मेरे ब्रिगेडियर बाप को मेरे लिए कोई उच्च-प्रशिक्षित वर ढूँढ़ने में संकोच का सामना न करना पड़े।” मुझे उसकी बातों पर हंसी भी आई और रंज भी, उसके उस बेधड़क अपितु बेलाग वाक्य को सुन मैंने अचरज भरी निगाह से उसकी ओर देखा, पर चुप रहा।

जहाँ कॉलेज के सभी लड़के रमा से बातचीत करने को तरसते थे तो वहीं वह मेरे अलावे किसी से भी बातचीत तो क्या, मिलना तक पसंद नहीं करती थी। मुझे समझ में नहीं आया कि वह कैसे मेरी जिन्दगी के इतने करीब आ गई थी, बाद की बातचीत में उसने खुलेआम कहा था कि वह मेरी हैंडराइटिंग से बेहद आकर्षित हुई है। हम साथ-साथ उठते-बैठते, कैटीन में हम घंटों बैठ कर बातें करते, इधर-उधर की ढेरों बातें होती, उन बातों में अक्सर हमारी बचपन के दिनों की बातें होती, परिवार की बातें होती, रमा के आग्रह से चाय-काफी पीते, बिल हमेशा वही चुकाती थी, मेरी औकात ही क्या थी? वैसे मैंने भी उससे साफ-साफ बता दिया था और कहा था कि बिल चुकाने के मामले में उसके सामने निर्लज्ज होना भी मुझे मंजूर होगा। इसलिए मैंने कभी बिल चुकाने के लिए उसके सामने नाहक जेब टटोलने की झूठी कोशिश भी नहीं की, दरअसल मेरी आर्थिक हालत से वह वाकिफ हो चुकी थी। बिल चुकाते हुए कभी-कभार मुझसे कहती, शायद मजाक में ही, कि इसका लेखा-जोखा वह रखेगी और समय आने पर वसूली ब्याज सहित करेगी, प्रत्युत्तर में मैं भी उससे कहता, बेशक जिम्मेदारी से, कि वह दिन उसके लिए सबसे खुशी का दिन होगा।

हमारे मिलने-जुलने का सिलसिला यूँ ही चल पड़ा, मिलने के दौरान धीरे-धीरे मुझे वह अच्छी लगने लगी थी, मैं उससे मिलने के बहाने ढूँढ़ता फिरता था। क्योंकि मुझे उसका साथ अच्छा लगने लगा था, मैं

उसके साथ कॉलेज में ज्यादा-से-ज्यादा समय बीताने में खुशी का अनुभव करने लगा था। कॉलेज के बाहर भी हम मिलते थे। उसके सान्निध्य में मुझे गर्व महसूस होता था। ऐसा शायद स्वाभाविक ही था क्योंकि जिस लड़की के साथ मेलजोल बढ़ाने के लिए कॉलेज में सबकी नजरें टिकी हुई थी वह मेरे साथ बेधड़क और बेखौफ उठती-बैठती थी। आते-जाते लड़के ईर्ष्या से आग-बबूले होकर हमें घूरते। उन लड़कों की हरकतों को देख अक्सर मुझे वह कहा करती थी, “आजकल लड़की ने किसी लड़के के साथ उठ-बैठ क्या लिया, हँस कर जरा बात क्या कर ली कि लड़का तो चिपक ही जाता है मानो उसे प्रेम करने का खुला निमंत्रण मिल गया हो। प्रेम-प्रसंग में आगे बढ़ने के लिए हरी झंडी मिल गई हो जैसे।”

मैं अब बस उसे चाहने लगा था, मेरी आँखों में सिन्दूरी शाम की आभा धीरे-धीरे समाने लगी थी... सैकड़ों सपनों से लबरेज। मन-ही-मन मैंने उसके साथ ढेरों सपने संजो लिए थे। पर इसका इजहार मैंने उससे कभी नहीं किया या यूँ कहें कि ऐसा करने का दुस्साहस बटोर पाने की सामर्थ्य तक मुझ में नहीं थी। क्योंकि हमारे बीच प्यार-व्यार की बातें तो कभी होती ही नहीं थी। बातचीत के दौरान कई बार वह मुझे आगाह कर देती, “अनिमेष, जो मैं तुमसे मिलती हूँ और बातें करती हूँ इसका कोई गलत मतलब नहीं निकाल लेना, प्यार-व्यार की गलतफहमी में मत उलझ जाना, दोस्त हैं बस, दोस्ती निभाएँगे... बस और कुछ नहीं।” एक तरफ तो उसकी इस साफगोई से मेरे दिल को सुकून मिलता था जबकि दूसरी तरफ ये सब बातें मानो मेरे अन्दर उसके और मेरे बीच एक सीमा-रेखा खींचती तथा रिश्ते का एक दायरा अंकित करती जिसके दरमियान बने रहने का बार-बार मुझे अहसास दिलाती। मैं भी रिश्ते के उस दायरे को निभाने का भरसक प्रयास करता ताकि उसे लांघने जैसी धृष्टता की सोच भी मन में कहीं आ न पाए, मैं बस यही उम्मीद रखता कि मेरे प्रति रमा का विश्वास सदैव बना रहे और यूँ ही हम एक-दूसरे के साथ जुड़े रहें चाहे उस रिश्ते का चाहे कोई भी नाम क्यों न हो।

ऐसा भी होता था कि कभी यूँ ही बातें करते हुए अगर मेरा हाथ उससे अनजाने में कहीं छू जाता तो वह अपनी बड़ी-बड़ी कजराई आँखों से मुझे घूरती, कहती, मुझे टच करने की कोशिश गलती से भी मत करना वरना अपने ब्रिगेडियर बाप से कह दूँगी कि तुमने मुझे गलत ढंग से छुआ है... सेक्सुअल हरेसमेंट करने की कोशिश की है... इत्यादि-इत्यादि कहकर मुझे डराती, ‘सेक्सुअल हरेसमेंट’ जैसे शब्दों का इतनी सहजता से प्रयोग और वो भी एक लड़की के द्वारा किया जाना मुझे कहीं-न-कहीं अप्रस्तुत करता था। ऐसा मेरे स्वभाव के विपरीत था, मुझे समझ में नहीं आता था कि यह उसकी चेतावनी होती थी या महज मजाक होता था या फिर निहायत ही बचपने का चुलबुलापन। उसके इन बातों से मैं सजग जरूर हो जाता, मेरे अन्तःस्थल में रमा के प्रति उमड़ते प्रेम भाव को मैं सीमित रहने देता, उभरने से रोकता। संकुचित अवस्था में ही छोड़ देता, पनपने नहीं देता।

फिर भी, पता नहीं क्यों मुझे वह अच्छी लगती थी। उसके साथ समय बीताना निहायत ही खुशनुमा होता था।

जब वह पहली बार अपने माता-पिता से मिलाने अपने घर ले गई थी तो मैं किसी अनजाने भय से सिहरने लगा था, उसने मेरे मनःस्थिति को भांपते हुए मेरे भय का कारण पूछा था, पूछा था कि मेरे मन में कहीं चोरी-छुपे प्यार-व्यार तो नहीं पनप रहा है? फिर कहा था कि अगर मन में कोई मैल नहीं है और हृदय پاک-साफ है तो फिर किस बात का डर है? उसकी इस स्पष्टवादिता से मैं प्रभावित हुआ था। पर उसे क्या पता था कि मेरे दिल में उसके प्रति प्यार के बादल उमड़-घुमड़ कर बरसने को व्याकुल हो रहे हैं, उसके अल्हड़पन... उसकी साफगोई में मुझे निश्छल प्यार झलकता था। मन-ही-मन मैं उससे प्यार करने लगा था।

उसका कोई भाई नहीं था, उसकी माँ ने शायद इसलिए मुझे राखी के दिन आने को कहा था। पर उसने मुझे साफ तौर पर कहा था कि वह उन लड़कियों में से नहीं है कि जो लोगों के बीच राखी बाँध कर भाई-बहन के रिश्ते का दिखावा करते हैं, जबकि बाद में यह रिश्ता प्रेमी-प्रेमिका जोड़ी में बदल जाता है। उसने फिर स्पष्टतया कहा था कि “मैं तुम्हें राखी नहीं बाँध सकती, हम किसी रिश्ते में जुड़े रहना नहीं चाहते।”

ऐसा कहते हुए उसने आग्रह किया था, “तुम बस बहाने बना लेना। मत आना यहाँ मेरे घर, माँ को मैं संभाल लूँगी।” उसकी ये बातें मुझे विस्मित करती। मैं अपने मन में रमा के प्रति उमड़ते प्यार को कोई निर्दिष्ट दिशा देने के लिए किसी निष्कर्ष पर पहुँचने में असमर्थ था। मुझे उसके इन बातों से ताज्जुब होता था कि आखिर वह चाहती क्या है, दरअसल ये रिश्ते ही तो हैं जिनके सहारे मनुष्य समाज में रहता है। भाई-बहन, प्रेमी-प्रेमिका... वह चाहे कोई भी बंधन हो... कोई भी रिश्ता हो, पर इसके विपरीत किसी भी रिश्ते से सरोकार न रखने वाली रमा का व्यवहार मुझे प्रायः अचंभित करता। उसके ऐसे व्यवहार से कभी तो वह मुझे किसी नासमझ बच्ची सी लगती... मासूम और अबोध तो कभी एक उद्दंड, ढीठ और अनासक्त लड़की जिसके लिए प्यार शब्द निरर्थक और बेमानी है। अंततः मेरे लिए रमा महज एक अनबुझ-सी पहली बन कर रह जाती। उस पहली को सुलझाने की नाहक कोशिश न करते हुए मैंने यह निश्चय कर लिया कि अब रमा के लिए अपने मन में सुलगते प्यार की मद्धिम-सी लौ को वह जबरन बुझा देगा। वह वैसा ही करेगा जैसा रमा चाहती है... बिना किसी आसक्ति के एक अच्छा दोस्त बना रहेगा। यह निर्णय निश्चय ही मेरे लिए बेहद कष्टकर था, उसके साथ मिलने में, बातचीत करने में न जाने मन के अन्दर कहीं न कहीं अनायास ही प्यार का भाव स्वतः जागृत हो ही जाता था। मैं कतई रमा से अपने आप को अलग करने में समर्थ नहीं हो पा रहा था। इसलिए, मैंने कहीं दूर चले जाने का निश्चय कर लिया। शहर से कहीं दूर ही नहीं बल्कि रमा की जिन्दगी से भी कहीं दूर... बहुत दूर, ताकि रमा को अपने जीवन से जबरन निकाल सकूँ।

रमा की जिन्दगी से दूर जाने के लिए फाइनल परीक्षाओं के बाद मैं गाँव चला गया, पर गाँव जाने का कारण रमा से मैंने माँ की बीमारी ही बताया था। मुझे छोड़ने रमा स्टेशन पर आई थी। उसने मुझे जल्दी वापस आने को भी कहा था। वहाँ गाँव में शुरूआती कई दिनों तक तो मैं उदास-सा रहने लगा, किसी भी काम में मन नहीं लगता था। पर मेरे गाँव आने के उद्देश्य का ध्यान आते ही मैं सजग हो गया और अपने आप को किसी भी काम में व्यस्त रखने लगा। अपने बाबा के खेती-गृहस्थी के काम में हाथ बंटाने लगा, खेतों में हल जोतता, दिन भर कठिन परिश्रम करता ताकि रात में थका-हारा बेफिक्र चैन की नींद सो पाऊँ... रमा की यादों के बिना।

इसी बीच मेरे नाम की एक चिट्ठी मिली। मुझे यकीन नहीं आया, चिट्ठी रमा की थी, मेरे नाम उसके हाथ की वह पहली चिट्ठी थी, जिस चिट्ठी के लिए मैं कभी सपने संजोता था वह ऐसे मौके पर मिली कि जब मैं उसे भुलाने की कोशिश में लग गया था, चिट्ठी की डिलीवरी लगभग दो महीने के बाद हुई थी, क्योंकि पता अधूरा था। मैं सोच में पड़ गया कि ऐसी क्या बात हो गई कि रमा को चिट्ठी लिखने की जरूरत पड़ गई। किसी अनजाने आशंका से भयभीत होकर थरथराती उँगलियों से मैंने चिट्ठी खोली। मैंने चिट्ठी के आशय को जानने के लिए सरसरी निगाह से जल्दी-जल्दी में अंत तक पढ़ डाला। उसने लिखा था...

“अनिमेष, माँ की तबियत कैसी है ? मेरे पापा का तबादला हो गया है, किसी भी समय हमलोग यहाँ से चले जाएंगे। तुमसे मिलना चाहती हूँ, बहुत सी बातें हैं तुम्हें कहने को। एक अफसोस रह जाएगा अगर तुमसे न मिल सकूँ, अपने आप को कभी माफ नहीं कर पाऊँगी। तुम्हें सामना करने की हिम्मत जुटा पाउंगी कि नहीं, कह नहीं सकती। तुम्हारी कमी महसूस कर रही हूँ, चिट्ठी से बता नहीं सकती, जल्दी आ जाना, कहीं देर न हो जाए। तुमसे प्यार करने लगी हूँ। सिर्फ तुम्हारी, रमा” चिट्ठी को कई बार पढ़ा था मैंने, मुझे तनिक भी यकीन नहीं हो पा रहा था कि रमा की चिट्ठी ऐसी भी हो सकती है। चिट्ठी में लिखे एक-एक वाक्य मुझे जितना विस्मित कर रही थी, अंत का वाक्य ‘तुमसे प्यार करने लगी हूँ’ और वे दो शब्द ‘सिर्फ तुम्हारी’ उतना ही रोमांचित कर रही थी। ‘प्यार’ और ‘रमा’ दो परस्पर-विरोधी शब्दों का मेल अचानक कुछ अर्चभित कर रहा था पर चिट्ठी को पढ़कर जिस बात का अहसास मुझे हुआ वह यह था कि उसके स्वभाव के प्रतिकूल वह बेहद हताश लग रही थी। चंद दिनों में उसके स्वभाव में परिलक्षित ऐसा अप्रत्याशित बदलाव कतई विश्वसनीय नहीं था। पर कहीं-न-कहीं तो कोई बात थी जो मेरे समझ से परे थी, उसे जानने की उत्सुकता मुझे विचलित कर रही थी। चाहे कुछ भी रहा हो, ‘रमा मुझसे प्यार करती है’ यह जानकारी उससे मिलने की इच्छा प्रबल से प्रबलतर हो गई।

मैं अपने आप को संयत करते हुए उसके घर गया। उसकी माँ ने दरवाजा खोल कर अंदर आने को कहा। वहाँ सब कुछ बदला हुआ लग रहा था, घर का माहौल पहले से बिल्कुल अलग था, एक अजीब-सी चुप्पी छायी हुई थी, रमा आई भी पर चुपचाप नजरें झुका कर झेंपते हुए

आगे निकल गई। कुछ भी न बोली, साँसें तेज थीं, उसकी आँखें कोरी थीं। उन आँखों की चमक ना जाने कहाँ खो गई थी मानो अब उसका कोई सपना शेष नहीं बचा था। जैसा कि उसने अपने पत्र में जल्दी आने को कहा था और यह भी लिखा था कि कहीं देर न हो जाए, शायद सचमुच देर हो चुकी थी... बहुत देर।

क्योंकि मैं उसमें आए बदलाव को स्पष्टतया देख पा रहा था, एक खास चीज ने मुझे चौंका ही दिया... वह थी उसकी ऊँगली में हीरे की एक चमकदार अंगूठी, ऊँगली को रमा अपने दुपट्टे से लपेट कर मेरी नजरों से बचा कर निकल गई, पर मैं रमा से बेइंतेहा प्यार जो करता था... उसके इस व्यवहार को नजरंदाज कैसे कर सकता था। मुझसे शायद कुछ छिपाना चाह रही थी वह, संभवतः वह ‘इंगेजमेंट रिंग’ थी जिसे वह मुझसे छुपाना चाहती थी, अब मुझे उसमें आए उस अप्रत्याशित बदलाव को समझते देर नहीं लगी... उसकी शादी अचानक ही तय कर दी गई थी जिसके लिए शायद वह कतई तैयार नहीं थी।

उसकी माँ ने भी इसका खुलासा किया, ड्राइंग रूम में वे मेरे साथ बैठी थीं। उन्हें इसका दुःख था कि मुझे ‘इंगेजमेंट सेरेमनी’ में बुलाया नहीं गया था। जल्दबाजी में इंगेजमेंट की रस्म अदायगी हुई थी, यही कारण बताया था उन्होंने मुझे नहीं बुलाने का, उसके पापा की इच्छा थी कि इस काम में देर नहीं होनी चाहिए। और, गिने-चुने लोगों के बीच ही निपटा दिया गया। उन गिने-चुने लोगों में मेरा गिना जाना कहाँ तक संभव था ? उनमें मेरा अस्तित्व ही कहाँ था ?

मुझे बिना कुछ कहे रमा का यूँ पास से गुजर जाना शायद उसकी माँ को भी अच्छा नहीं लगा था। “देखो, शादी तय होने पर रमा तुमसे कैसे लजा रही है।” उन्होंने अपने ढंग से मुझे समझाने की कोशिश की थी, उन्हें क्या पता कि रमा के हृदय में कैसी द्वंद्व चल रही होगी। उसके मुखमंडल पर पसरी हताशा से उसकी मनोदशा को मैं बखूबी समझ पा रहा था, वह शायद इस रिश्ते से संतुष्ट नहीं है, खुलेआम रिश्ते को विरोध कर पाने की स्थिति में भी नहीं है, शायद मुझसे भी कहने में उसे झिझक हो रही है। उसकी इस असहाय अवस्था उसके चेहरे पर साफ झलक रही थी।

परदे की ओट से रमा ने अपनी माँ की नजरों से बचते-बचाते मुझे टकटकी निगाह से देखा था। डबड़बाई आँखें शायद कुछ कहना चाह रही थीं। “हमारी रमा रानी बन कर ससुराल में राज करेगी। खानदानी लोग हैं, पुरखों से बसा-बसाया व्यापार है।” बातचीत का सिलसिला जारी रखते हुए उसकी माँ ने जानकारी दी थी। रमा की आँखें छलक कर आंसुओं की धार बहा रही थी। मैंने कनखियों से उसे वहीं खड़ा पाया।

उसकी इस दुःस्थिति के लिए मैं अपने आप को जिम्मेदार मानने लगा। मुझसे रहा नहीं गया, निराश हो कर मैंने जाने की अनुमति मांगी थी। उसकी माँ ने रमा को आवाज लगाई थी, पहले से दरवाजे पर खड़ी रमा

बैठक में आई। आंसुओं को पोंछ लिया था उसने, पर चेहरे पर उदासी का भाव अब भी मौजूद था।

“तुम लोग अब बातें करो, मैं चाय लेकर आती हूँ।” कहकर वे चली गई। रमा ने तह किए हुए एक कागज को छुपा कर मुझे पकड़ाया और कहा इसे घर में पढ़ना। शायद उसकी चिट्ठी थी। माहौल की गंभीरता को हल्का करने के लिए जाते-जाते मैंने उसकी माँ के शब्दों को दोहराया था, “रमा, रिश्ता मुबारक हो! तुम खुशकिस्मत हो... रानी बनकर ससुराल में राज करोगी।” उसने मेरी आँखों में आँखें गड़ा कर बेधड़क कहा था “तुम्हारी दासी बन कर भी जी लेती, अनिमेष पर...” कहते-कहते फफक कर रो पड़ी। आगे कुछ कह नहीं पायी, उदासी छा गई थी उसके चेहरे पर।

तीन साल की जान-पहचान में या यूँ कहें कि घनिष्टता में जिस लफ्ज को सुनने के लिए मैं तरसता रहा, अपने-आप को सब्र की भट्टी में तपाता रहा... उसका इजहार इस प्रकार से होगा मैंने कभी ऐसी आशा नहीं की थी। रमा की ये स्वीकारोक्ति आज भी मुझे उद्वेलित करता है, उसके कांपते हुए स्वर अब भी मेरी अंतरात्मा को झकझोरता है। उस रात हमेशा की तरह मुझे वह उनके विशालकाय बंगले के फाटक तक छोड़ने आई थी... शायद उसके विशाल हृदय के फाटक तक, रात के अँधेरे में भी मैंने उसके गाल पर लुढ़क आए आंसुओं को स्पष्ट देखा था। उसकी धड़कनों को महसूस किया था। उसकी स्नेहसिक्त आँखें मुझे निस्तब्ध निहार रही थीं। शायद प्रत्युत्तर में मुझसे कुछ सुनने को आशासित थी। तभी घर के अंदर से किसी के पुकारने की आवाज से वह चौंक कर अपनी आंसुओं को दुपट्टे से पोंछते हुए अँधेरे में भाग कर दरवाजे को धीमे से खोला और चुपके से कमरे में दाखिल हो गई। उसके वे शब्द मेरे कानों में प्रतिध्वनित हो रहे थे। उस प्रतिध्वनि की उत्कृष्टता क्रमशः तीव्र से तीव्रतर हो रही थी। मैं ठिठक कर खड़ा रहा वहाँ कुछ देर तक अंधेरे में... किंकर्तव्यविमूढ़। वह वापस नहीं आई। सचमुच मुझसे बड़ी देर हो गई। बोझिल मन से मैं होस्टल की तरफ बढ़ा। कमरे में आकर चिट्ठी को खोल कर पढ़ने लगा...

“तुमने बहुत देर कर दी, अनिमेष! पता नहीं यह चिट्ठी तुम्हें किस हालत में मिलेगी क्योंकि काफी इंतजार करने के बाद भी जब तुम नहीं आए तो मेरे अंतरात्मा में उत्पन्न बेचैनी को मैं इस चिट्ठी के जरिए तुम्हें बता देना आवश्यक समझती हूँ। अन्यथा मैं जीवन पर्यंत अपराधबोध से मुक्त नहीं हो पाऊँगी। मुझे तुम्हारी कमी का अहसास तब हुआ जब तुम अपने गाँव चले गए। उन दिनों एक-एक पल काटना मेरे लिए दूभर हो गया था। मुझे तुमसे प्यार जो हो गया था। तुमसे मिलने के लिए मैं बेतहासा तड़पने लगी। चिट्ठी लिखकर मेरे बुलाने के बावजूद भी जब तुम नहीं आए तो मुझे यह विश्वास हो गया कि तुम्हें मेरे जीवन से कोई दिलचस्पी नहीं है और न चाहते हुए भी पापा के शादी के प्रस्ताव को मैंने स्वीकार कर लिया। मेरी शादी पापा के बचपन के दोस्त के बेटे से जल्दबाजी में तय कर दी गई, इंगेजमेंट भी आनन-फानन में हो गई। न चाहते हुए भी मना नहीं कर पायी।

यूँ ही एक दिन तुम्हारा रूम-मेट रतन जो तुम्हारे गाँव का ही है, मुझे कॉलेज में मिल गया। मैंने उत्सुकतावश उससे तुम्हारी जानकारी लेनी चाही, मेरे पूछने पर उसने तुम्हारा जो पता बताया वह मेरे भेजे गए पत्र पर लिखे पते से अलग था। दरअसल मैंने गाँव का नाम तो सही लिखा था पर पते में तहसील का नाम ही नहीं लिखा था। रतन ने बताया कि तुम्हारे गाँव के नाम का और भी कई गाँव है, इसलिए बिना तहसील लिखे पते की चिट्ठी देर से मिलती है। आगे, उसने मुझे तुम्हारे बारे में सब कुछ बताया... मेरे साथ बिताए हर पल की जानकारी थी उसे... तुम्हें मुझसे बेइतहा प्यार होने की बात... कई रातें जो तुमने उससे मेरी बातें कहते हुए जाग कर बिताई... और भी कई बातें, उसने यह भी बताया था कि मेरे स्वभाव के अनुरूप तुमने अपने को ढाल लिया और अपने प्यार की तिलांजलि ही दे डाली। मुझे भुलाने के लिए तुम गाँव चले गए, माँ की बीमारी का बहाना बनाकर। उसने तुम्हारी बनाई एक खूबसूरत पेंटिंग भी दिखाई जिसमें तुमने मेरी मांग में सिन्दूर और माथे पर एक लाल बिंदी से मुझे एक विवाहिता के रूप में आँका था। मैं वो पेंटिंग मेरे साथ ले आई हूँ। तुम्हारी ख्वाबों की उस रमा को मैं हमेशा मेरे पास रखूँगी। तुम्हारे प्यार को उज्जीवित रखूँगी, कभी मलिन नहीं होने दूँगी।

मैं समझ सकती हूँ कि मैंने तुम्हें कितना दुःख दिया है... चोट पहुँचाई है। अब तो तुम्हारे बिना ही घुट-घुट कर जी लूँगी। प्रायश्चित करूँगी।

काश तुम्हारे प्यार को मैं समझ पाती,

काश तुम्हारा पता लेने रतन से मैं पहले मिल पाती,

काश तुम आ ही जाते... तुम्हारे लिए पापा से मैं मिन्नतें कर लेती,

मुझे माफ कर देना, अनिमेष! जानती हूँ, तुम्हारी स्वच्छल भावनाओं के प्रतिदान में मैं कुछ देने में असफल रही हूँ। बदले में मैंने तुम्हारे प्यार का गला घोट है, जिसका मैं गुनहगार हूँ और जिसकी सजा के लिए शायद यह जन्म तो क्या मुझे कई जन्म भी लेने पड़ें तो मुझे अफसोस न होगा। तुम्हारी रमा”

इस हृदय-विदारक मनःस्थिति से कुछ उबर कर दो-एक दिन के बाद जब मैं रमा से मिलने उसके घर पर गया तो दरवाजे पर ताला लगा था। बंगले के माली से बस इतना ही पता चल पाया कि रमा के पापा के तबादले पर वे लोग शहर छोड़ कर चले गए हैं। वे लोग कहाँ गए आज तक पता नहीं चल पाया। उसके बाद न रमा कभी मिली और न ही उसकी कोई चिट्ठी, बस एक याद भर रह गई है, हाँ, अब रमा मेरे लिए बस एक तित्क-मधुर याद बन कर रह गई है जो रह-रह कर मुझे बेचैन करती है...। बेचैन करती है अधूरे-से पते वाली वह चिट्ठी जिसने मेरे जीवन को भटकने के लिए मजबूर कर दिया।

सेवानिवृत्त, मुख्य प्रबंधक

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति गुरदासपुर का उद्घाटन



नराकास, गुरदासपुर की प्रथम अर्धवार्षिक बैठक के अवसर पर मुख्य अतिथि श्री नरेन्द्र मेहरा, सहायक निदेशक राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय भारत सरकार का फूलों से स्वागत करते हुए हमारे बैंक के श्री लखबीर सिंह (नराकास अध्यक्ष) आंचलिक प्रबंधक गुरदासपुर व प्रबंधक (राजभाषा) सुमन कुमार तथा अन्य सदस्य।



हमारे बैंक के राजभाषा प्रबंधक श्री सुमन कुमार, नराकास गुरदासपुर के सदस्यों को संबोधित करते हुए तथा विभिन्न गतिविधियों की जानकारी देते हुए।

विमोचन



दिल्ली बैंक नराकास की 51वीं छमाही बैठक के दौरान बैंक की हिंदी तिमाही पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' का विमोचन माननीय अतिथियों द्वारा किया गया। मंच पर उपस्थित हैं- श्री संदीप आर्या, निदेशक, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, श्री शैलेश कुमार, संयुक्त निदेशक, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार, श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक (का.), गृह मंत्रालय, भारत सरकार, श्री रवि कुमार, अध्यक्ष (नराकास), श्री बदलेव सिंह, सचिव (नराकास) तथा हमारे बैंक से श्री अमित श्रीवास्तव, उप महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी, श्री गोपाल कृष्ण, आँचलिक प्रबंधक (दिल्ली-2), श्री राजीव राय (वरिष्ठ प्रबंधक) एवं डॉ. नीरु पाठक (प्रबंधक)

* नियम एवं शर्तें लागू * ब्याज दर-रफा रट स जुड़ा